संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ २,५००
वार्षिक शुल्क ₹ २००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ ५.००

वर्ष : १२८ : संयुक्तांक ४० एवं ४१ ०५ एवं १२ अक्टूबर, २०२३ (गुरुवार) आश्विन कृष्णपक्ष त्रयोदशी सम्वत् २०८० दयानन्दाब्द १६६ वेद व मानव सृष्टि सम्वत्:१६६०८५३१२४

सच्चिदानंदमयी अनंतशक्तिका नाम ही महाशक्ति है

-परीक्षित मण्डल 'प्रेमी'

पराशक्ति की उपासना ! उस उपासना का गौरव गरिमापूर्ण पावन पौरुष पर्व !! एक ऐसी पराचिन्मयी शक्ति की पूजा-पर्युपासना है, जिसमें पशुता का छल दंभ नहीं, असुरों का अहंकार नहीं, क्षुद्र स्वार्थ और विश्वदाहक दुर्निवार घृणा की कटुता नहीं, कुत्सित विषय वासना का विजृंभण नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी पराभास्वर भूयसीज्योति की उपासना है, जो आत्मिक सिद्धि की सौमनस्यता की विराट चिन्मय चेतना बनकर हमारे चराचर जगत को, हमारे समस्त मंगलमय गान वैभव को हमारी समस्त ऊर्ध्ववगामिनी ज्योतिर्मयी चेतना को अमृत ज्योति से पवित्र बना देती है तथा हमारी चेतनात्मक ऊर्जा-चितृ शक्ति में मकरध्वज का उष्मा उड़ेलकर हमें मृत्युंजयी दिव्य विभूतियों से प्रोद्भासित कर देती है और अन्तःकरण की सारी तामसी तिमिरमयी विषम विरसता हमारी अन्तर्मुहा की दुर्निवार द्वन्द्व व्याधि विभेदमय भेद भ्रांति, रुग्ण रुड़ियों के त्रयताप ज्यार का उन्मूलन करती है। हमारे मननवान मनमानस सरोवर को निर्विकार, दोषरहित, शुचितर धवल धारा से अनुप्राणित करती है। क्षयिष्णु तन और कुण्ठित अन्तर्मन को अपने सर्वतोभद्र चेतनात्मक स्फूरण (स्पेसिफिक थैलगिक प्रोजेक्शन) से प्रभावान कर हमें ऋद्धिमान करती है। अपने दिव्य देवत्व, ज्योतिरसि गुणों से हमारी चंचल चित्तवृत्तियों को संयमित, स्तंभित कर द्युतिलेखा से विभूषित करती है। अतः इसकी सघन साधना-समाराधना से सामान्य जीवन की प्राणधारा में भी तिग्मतेजस्विता परमा की प्रखरता तथा अकल्मष की क्रियाशीलता सतत विभासित होने लगती है।

आज के इस जड़ताक्रांत भौतिक-वादी हेतुवादी, ईश्वरद्रोही, मानव विद्रोही, प्रेमद्रोही युग में इस अमृत से संदीप्त पराशक्ति की उपासना से हम गलीमस अल्प से विराट ऋत प्रवीतमय भारवर भूमा की ओर आरोहण करते हैं। जड़ विषाद की कुरूप कुहेलिका से निकलकर हम सार्वभौम दिव्यालोक में प्रयाण करते हैं। पतन, पराजय, कुंठा, विग्रह, विरोध, तामसी तिमिर और कर्दममयी भूमि से हम आसमंतात् भूमालोक में पदार्पण करते हैं। मृत्यु श्रृंखला के विकट बंधन और विग्रह की विभीषिका से रहित होकर हमारी अन्तर्चेतना सच्चिदानंदमयी दिव्य ज्योति से अनुप्राणित होने लगती है। इससे हमारे मन प्राणों में सार्वभौमिक, सार्वकालिक और अलौकिक पराशक्ति का दिव्य संचरण होने लगता है तथा सर्वकल्याणमयी देवत्व की धवल धारा प्रवहमान होने लगती है। अमर्त्य की ज्योति सुधा की पराकास्मिक चेतना स्पंदित होने लगती है। इसकी सतत राघन साधना अर्चना से हमें भौतिक सुख आनंद उच्छाह की प्राप्ति ही नहीं होती है, बल्कि ब्रह्मानंद सहोदर अगंद आनंद उल्लास की उपलब्धि भी होती है। इसकी अविराम साधना एक ऐसी दिव्य किरणमाला है, जो हमारी संवेदनाओं के शतदल को प्रस्फुटित, पल्लवित, पुष्पित और सुरभित करती है। हमारी जितनी सात्विक क्रियाएँ और अमृत प्राण से आप्लावित ऋतमय विचार हैं, वे ओजस, तेजस और ब्रह्मवर्चस के रूप में पूंजीभूत होकर आत्मिक सिद्धियों को उद्भासित करती हैं। इससे हमारी ऋतंवरा प्रज्ञा, दुःख, संशय, चिन्ता और विषम विषाद कालकूट से विरहित हो जाती है।

यह भौतिकता से परे ईशान महाशक्ति है। इस भूयसीज्योति महाशक्ति की विधिपूर्वक आराधन-अनुष्ठान से हमारी मलीमस चेतना एवं मूर्च्छित प्राणधारा में अमृत के संदीप्तमय नित्य सुखद सुषमामय, मधुमय द्युतिमत् चेतना प्रदीप्तमान होने लगती है। तभी तो भारतीय ऋषि-मुनियों, योगियों तथा मूर्त्य- अमर्त्य लोक के विद्याधर, किन्दूर, वसु, यक्ष, सिद्ध, गंधर्व, मरुद्गण, यातुधान और अमर भी इस अपराजेय महाशक्ति की अर्चना-आराधना करते हैं। इसीलिए हमारे आत्मवेत्ता मनीषियों ने भी इस परम ऋतमयी महाशक्ति की महार्थ महिमा और गौरव गरिमा का व्याख्यान करते हुए कहा है कि यह इन्द्रियातीत महाशक्ति ही दर्शनीय, श्रवणीय, मननीय और आत्मसाक्षात्करणीय है। क्योंकि यह अलौकिक महाशक्ति यांत्रिक ऊर्जा, उष्णीय ऊर्जा, प्रकाश ऊर्जा, विद्युत् ऊर्जा, रासायनिक ऊर्जा, नभकीय ऊर्जा से परे सच्चिदानंदमयी परम ऋतमयी भागवत्मयी महाशक्ति है। इसी से विशाल विश्व के से जड़ चेतनात्मक संस्थान प्रेरित-प्रभावित होती हैं। इसी महतोमहीयान शक्ति को अपौरुषेय वेदों में सर्वव्यापक (Omnipresent), सर्वज्ञ (Omniscient), सर्वशक्तिमान (Omnipotent) कहा गया है। ये त्रय महाशक्ति इन्द्रियातीत, प्रतिमा रहित, अलौकिक गुण मात्र परमात्मा के ही हैं। इसी परामहाशक्ति को वेद में मातरिश्वा और विवश्वान बताया गया है। यह अण्ड-पिण्ड, ब्रह्माण्ड की विशद विशाल व्यापकता की चेतना का केन्द्रबिन्दु है। इसी परमा महाशक्ति को पाश्चात्य मनीषियों ने अंगरेजी में 'गॉड' (GOD) कहा है। यहीं यह गौरतलब तथ्य है कि 'जी' से जेनेरेटर, 'ओ' से ऑपरेटर और 'डी' से डेस्ट्रोयर कहा गया है। क्या यह भारतीय चिन्तन और साधना में परिभाषित सृष्टिकर्ता ब्रह्मा, पालनकर्ता विष्णु और संहारकर्ता शिव से मेल नहीं खाता ? अणु-परमाणुओं की द्रुतगामी .. सूक्ष्मतम हलचलों में इसी की सूक्ष्म चेतना काम करती है। विज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि पृथिवी के किसी कोने में उच्चरित शब्द बेतार के तार द्वारा हम एक क्षण के सातवें हिस्से में सुन सकते हैं। इस सक्रियता और दिव्य चेतना को भारतीय संस्कृति और दर्शन में सच्चिदानंदमयी अनंत महाशक्ति की संज्ञा दी गई है। इसी सच्चिदानंदमयी चेतनात्मक महाशक्ति को "सत्यं शिवं सुन्दरम" भी कहा गया है। इसका अपना महत्त्व सर्वोपरि है।

वेदामृतम्

सं मा तपन्त्यभितः, सपत्नीरिव पर्शवः।
निबाधते अमतिर्नग्नता जसुः, वेर्न वेवीयते मतिः।।

ऋग् १०.३३.२

हे भगवन् ! देखो तो, मैं क्या-से-क्या हो गया ! तुमने राजा बनाकर मुझे इस देह-रूप अयोध्यापुरी में भेजा था। पर राजा होना तो दूर रहा, मैं तो दीन-हीन-दरिद्र होकर निवास कर रहा हूँ। एक समय ऐसा अवश्य था, जब मैं उन्नति के शिखर पर आसीन था। जहां कहीं मैं निकल जाता था, वहाँ मेरा स्वागत होता था, सब दुर्जन मुझसे थर-थर कांपते थे और सब सुजन मुझे अपने मध्य पाकर प्रफुल्ल हो जाते थे । पर आज तो मेरी अपनी पार्श्व-अस्थियाँ ही मुझे चुभ रही हैं, जैसे एक पति की अनेक पत्नियाँ उसे सन्तप्त करती हैं। मुझे मतिहीनता ने घेर लिया है, अविचारशीलता ने अपने पंजे में कस लिया है। जहाँ मैं किसी समय मतिमानों में अग्रणी माना जाता था, वहाँ अब अविवेक औौर किंकर्तव्यविमूढ़ता से ग्रस्त हूं। नग्नता भी अपने पैर फैला रही है। जहाँ मैं भौतिक सम्पत्ति से नग्न हो गया हूँ, वहाँ साथ ही मेरी आध्यात्मिक सम्पत्ति भी लुट गई है। शारीरिक और मानसिक दुर्बलता भी पीड़ित कर रही है। शरीर से चला नहीं जाता, गिर-गिर पड़ता हूँ। मन मर गया है, उत्साह समाप्त हो गया है, इच्छा-शक्तियाँ और महत्त्वाकांक्षाएँ किनारा कर गई हैं।

जैसे सामने बहेलिये को देखकर पक्षी की मति कांपने लगती है, वैसे ही अपने ही सम्मुख मृत्यु को नाचता देखकर मेरी मति भी कांप रही है। शारीरिक मौत और आध्यात्मिक मौत का नग्न ताण्डव मेरे आगे हो रहा है। मैं उससे त्राण पाने के लिए आकुल हो रहा हूँ, पंख फड़फड़ा रहा हूँ, बेचैनी से करवटें बदल रहा हूँ। हे प्रभु ! इस दुरवस्था से, इस भीषण परिस्थिति से, मेरा उद्धार कर दो। तुम्हारे अतिरिक्त इस समय कोई साथी दृष्टिगत नहीं हो रहा। तुम्हीं रक्षक हो, तुम्ही खिवैया हो, तुम्ही मंझधार से पार करानेवाले हो। हे प्रभु ! मेरी हालत पर तरस खाओ, मुझे अपनी शरण में ले लो।

साभार-वेदमंजरी

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

पंकज जायसवाल
मंत्री/सम्पादक

आर्य शिवशंकर वैश्य
प्रबन्ध सम्पादक

सम्पादकीय.....

नव रात्रि रहस्य

नवरात्रि कोई नव दुर्गा की नौ शक्तियों का कोई रूप नहीं हैं। शरद ऋतु की हल्की दस्तक के कारण हमारे आयुर्वेद के ज्ञाता ऋषि मुनियों ने कुछ औषधियों को इस ऋतु में विशेष सेवन हेतु बताया था। जिससे प्रत्येक दिन हम सभी उसका सेवन कर शक्ति के रूप में शारीरिक व मानसिक क्षमता को बढ़ाकर हम शक्तिवान, ऊर्जावान बलवान व विद्वान बन सकें।

नौ तरह की वह दिव्यगुणयुक्त महा औषधियां निस्संदेह बहुत ही प्रभावशाली व रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने वाली हुआ करती थीं जिससे हम ताउम्र हर मौसम की प्रतिकूल परिस्थितियों में भी स्वयं को ढालने में सक्षम हुआ करते थे और निरोगी बन दीर्घायु प्राप्त करते थे। लेकिन तथाकथित पुराणकारों ने इसका वास्तविक रूप विकृत कर अर्थ का अनर्थ ही कर दिया। हर दिव्यौषधि को एक शक्तिस्वरूपा कल्पित स्त्री का रूप दे दिया, कल्पना में ही नौ शक्तिवर्धक औषधियों को स्त्री नाम देकर, उनका वीभत्स आकार गढ़कर उन्हें मूर्त रूप में पूजना शुरू कर दिया। वस्तुतः यह सब समाज के धर्म के ठेकेदारों ने अपनी आजीवन व आगामी वर्षों पर्यंत तक अपनी भावी पीढ़ीयों की आजीविका चलाने के लिए यह अधर्म का एक सफल कुत्सित प्रयास किया है। आज यह पाखण्ड मानव बुद्धि को अंगूठा दिखाता, उपहास बनाता एक विकराल व विक्षिप्त रूप धारण कर चुका है जिसके बाहुपोश से छुटकारा मिलना सभी बुद्धिजीवीयों के लिए मुश्किल तो है लेकिन असंभव नहीं।

मनुष्य अपनी सामान्य बुद्धि का प्रयोग किसी विषय को मानने से पहले जानने के लिए करे तो वह प्रत्येक स्थिति को बारीकी से समझने में सक्षम हो सकता है। वह स्थिति स्वतःही उसके विवेक द्वारा अनुकूल बन सकती है। विवेकशील व स्वाध्यायशील बन इस प्रकार के सभी ढोंग, पाखंड और आडंबरों से बचा जा सकता है अन्यथा जिसे विषय का सत्य ज्ञान नहीं वा ज्ञानार्जित करने में आलस प्रमाद करता है वह तथाकथित मूढ़, अभिमानी, स्वार्थी पाखण्डी पंडे पुजारियों की तरह सभी सामाजिक कुरीतियों व धार्मिक मिथ्या कर्मकाण्डों में लिप्त रहता है।

नवदुर्गा के अमूर्त रूप के रूपक औषधि जिनका हमें शीतकाल में सेवन करना चाहिए-

(१) हरड़ (२) ब्राह्मी (३) चन्दसूर (४) कूष्मांडा या सफेद पेठा (५) अलसी (६) मोईपा या माचिका (७) नागदान (८) तुलसी (९) शतावरी या सतावर

१- प्रथम शैलपुत्री यानि हरड़ - कई प्रकार की समस्याओं में काम आने वाली औषधि हरड़, हिमावती है यह आयुर्वेद की प्रधान औषधि है, जो सात प्रकार की होती है।

२- द्वितीय ब्रह्मचारिणी यानि ब्राह्मी - यह आयु और स्मरण शक्ति को बढ़ाने वाली, रूधिर विकारों का नाश करने वाली और स्वर को मधुर करने वाली है। इसलिए ब्राह्मी को सरस्वती भी कहा जाता है।यह मन व मस्तिष्क में शक्ति प्रदान करती है और गैस व मूत्र संबंधी रोगों की प्रमुख दवा है। यह मूत्र द्वारा रक्त विकारों को बाहर निकालने में समर्थ औषधि है।

३- तृतीय चंद्रघंटा यानि चन्दुसूर - चंद्रघंटा, इसे चन्दुसूर या चमसूर कहा गया है। यह एक ऐसा पौधा है जो धनिये के समान है। इस पौधे की पत्तियों की सब्जी बनाई जाती है, जो लाभदायक होती है। यह औषधि मोटापा दूर करने में लाभप्रद है, इसलिए इसे चर्महन्ती भी कहते हैं। शक्ति को बढ़ाने वाली, हृदय रोग को ठीक करने वाली चंद्रिका औषधि है।

४- चतुर्थ कुष्माण्डा यानि पेठा -इस औषधि से पेठा मिठाई बनती है, इसलिए इस रूप को पेठा कहते हैं। इसे कुम्हड़ा भी कहते हैं जो पुष्टिकारक, वीर्यवर्धक व रक्त के विकार को ठीक कर पेट को साफ करने में सहायक है। मानसिक रूप से कमजोर व्यक्ति के लिए यह अमृत समान है। यह शरीर के समस्त दोषों को दूर कर हृदय रोग को ठीक करता है। कुम्हड़ा रक्त पित्त एवं गैस को दूर करता है।

५- पंचम स्कंदमाता यानि अलसी यह औषधि के रूप में अलसी में विद्यमान हैं। यह वात, पित्त, कफ, रोगों की नाशक औषधि है। अलसी नीलपुष्पी पावर्तती स्यादुमा क्षुमा।अलसी मधुरा तिक्ता स्त्रिग्धापाके कदुर्गरुः।।उष्णा -ष शुकवातन्धी कफ पित्त विनाशिनी।

६- षष्ठम कात्यायनी यानि मोइया - इसे आयुर्वेद में कई नामों से जाना जाता है जैसे अम्बा, अम्बालिका, अम्बिका। इसके अलावा इसे मोइया अर्थात माचिका भी कहते हैं। यह कफ, पित्त, अधिक विकार व कंठ के रोग का नाश करती है।

७- सप्तम कालरात्रि यानि नागदौन - यह नागदौन औषधि के रूप में जानी जाती है। सभी प्रकार के रोगों की नाशक सर्वत्र विजय दिलाने वाली मन एवं मस्तिष्क के समस्त विकारों को दूर करने वाली औषधि है। इस पौधे को व्यक्ति अपने घर में लगाने पर घर के सारे कष्ट दूर हो जाते हैं। यह सुख देने वाली और सभी विषों का नाश करने वाली औषधि है।

८- तुलसी - तुलसी सात प्रकार की होती है- सफेद तुलसी, काली तुलसी, मरुता, दवना, कुढेरक, अर्जक और षटपत्र। ये सभी प्रकार की तुलसी रक्त को साफ करती है व हृदय रोग का नाश करती है। तुलसी सुरसा ग्राम्या सुलभा बहुमंजरी।अपेतराक्षसी महागौरी शूलघ्नी देवदुन्दुभिः तुलसी कटुका तिक्ता हुध उष्णाहाहपित्तेंतृ । मरुदनिप्रदो हध तीक्षणाष्णः पित्तलो लघुः।

९- नवम शतावरी - जिसे नारायणी या शतावरी कहते हैं। शतावरी बुद्धि बल व वीर्य के लिए उत्तम औषधि है। यह रक्त विकार औरं वात पित्त शोध नाशक और हृदय को बल देने वाली महाऔषधि है। सिद्धिदात्री का जो मनुष्य नियमपूर्वक सेवन करता है। उसके सभी कष्ट स्वयं ही दूर हो जाते हैं।

इस आयुर्वेद की भाषा में नौ औषधि के रूप में मनुष्य की प्रत्येक बीमारी को ठीक कर रक्त का संचालन उचित व साफ कर मनुष्य को स्वस्थ करतीं है। अतः मनुष्य को इन औषधियों का सेवन अवश्य ही करना चाहिये और इस ऋतु के अनुसार सुगंधित आयुर्वेदिक औषधियों से युक्त सामग्री से नित्य यज्ञ करना चाहिए।

गतांक से आगे.....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ त्रयोदश समुल्लास

अथ कृश्चीनमत विषयं व्याख्यास्यामः

जबूर का दूसरा भाग

काल के समाचार की पहली पुस्तक

योहन रचित सुसमाचार

(समीक्षक) अब देखिये ! ये ईसा के वचन क्या पोपलीला से कमती हैं? जो ऐसा प्रपंच न रचता तो उसके मत में कौन फंसता ? क्या ईसा ने अपने पिता को ठेके में ले लिया है ? और जो वह ईसा के वश्य है तो पराधीन होने से वह ईश्वर ही नहीं। क्योंकि ईश्वर किसी की सिफारिश नहीं सुनता। क्या ईसा के पहले कोई भी ईश्वर को नहीं प्राप्त हुआ होगा? ऐसा स्थान आदि का प्रलोभन देता और जो अपने मुख से आप मार्ग, सत्य और जीवन बनता है वह सब प्रकार से दम्भी कहाता है। इससे यह बात सत्य कभी नहीं हो सकती।। ९७

९८-मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ जो मुझ पर विश्वास करे। जो काम मैं करता हूँ उन्हें वह भी करेगा और इनसे बड़े काम करेगा।। -यो० प० १४। आ० १२।।

(समीक्षक) अब देखिये ! जो ईसाई लोग ईसा पर पूरा विश्वास रखते हैं वैसे ही मुर्दे जिलाने आदि का काम क्यों नहीं कर सकते? और जो विश्वास से भी आश्चर्य काम नहीं कर सकते तो ईसा ने भी आश्चर्य कर्म नहीं किये थे ऐसा निश्चित जानना चाहिये। क्योंकि स्वयम् ईसा ही कहता है कि तुम भी आश्चर्य काम करोगे तो भी इस समय ईसाई एक भी नहीं कर सकता तो किसकी हिये की आंख फूट गई है वह ईसा को मुर्दे जिलाने आदि का काम कर्तृता मान लेवे।।१८।।

९९- जो अद्वैत सत्य ईश्वर है।

-यो०५० १७ आ० ३।।

(समीक्षक) जब अद्वैत एक ईश्वर है तो ईसाइयों का तीन कहना सर्वथा मिथ्या है।।९९।। इसी प्रकार बहुत ठिकाने इज्जील में अन्यथा बातें भरी हैं।

योहन के प्रकाशित वाक्य -

अब योहन की अद्भुत बातें सुनो- १००-और अपने-अपने शिर पर सोने के मुकुट दिये हुए थे। और सात अग्निदीपक सिंहासन के आगे जलते थे जो ईश्वर के सातों आत्मा हैं। और सिंहासन के आगे कांच का समुद्र है और सिंहासन के आस-पास चार प्राणी हैं जो आगे और पीछे नेत्रों से भरे हैं।

-यो० प्र० प० ४। आ० ४। ५।। ६।।

(समीक्षक) अब देखिये ! एक नगर के तुल्य ईसाइयों का स्वर्ग है। और इनका ईश्वर भी दीपक के समान अग्नि है और सोने का मुकुटादि आभूषण धारण करना और आगे पीछे नेत्रों का होना असम्भावित है। इन बातों को कौन मान सकता है? और वहां सिंहादि चार पशु भी लिखे हैं।।१००।।

१०१-और मैंने सिंहासन पर बैठने हारे के दाहिने हाथ में एक पुस्तक देखा जो भीतर और पीठ पर लिखा हुआ था और सात छापों से उस पर छाप दी हुई थी। यह पुस्तक खोलने और उसकी छापें तोड़ने योग्य कौन है। और न स्वर्ग में और न पृथिवी पर न पृथिवी के नीचे कोई वह पुस्तक खोल अथवा उसे देख सकता था। और मैं बहुत रोने लगा इसलिए कि पुस्तक खोलने और पढ़ने अथवा उसे देखने योग्य कोई नहीं मिला।।

-यो० प्र० पर्व० ५। आ० १ २ ३ ४।।

क्रमशः अगले अंक में...

दयानन्द शास्त्रार्थ प्रश्नोत्तर-संग्रह

"साधु सिद्धकरण जो की ओर से प्रश्नों के उत्तर"

प्रश्न = मुँह बांधने में क्या धर्म है ? हमको तो पाप प्रतीत होता है। इत्यादि ।

उत्तर- जबकि मकान में अग्नि की ज्वाला निकलती है, उस मकान के द्वार में होकर वायु भीतर जाती है तो वायु के जीव सब मर जाते हैं। जब बारड़ा (द्वार) बन्द किया जावे वायु की ओट से सब जीव बच सकते हैं और बाहर भी उस ज्वाला का तेज कपड़े की ओट से ठंडा होकर जाता है जैसा कि उष्ण जल की भाप। बाहर एक गर्म की हुई चीज की भाप के निकलते समय कपड़े की ओट दो तो फिर ओट से बचकर भाप बाहर जायेगी वह फिर वैसी गर्म कभी न रहेगी वा आड़ा हाथ देकर देखो तो पहले जो हाथ देगा उसका जलेगा। वही जल की भाप निकलेगी तो दूसरी ओर जो आजूबाजू जो हाथ रहेगा कभी वैसा नहीं जल सकता। यह तो प्रत्यक्ष दीख पड़ता है और जीव अजर, अमर है परन्तु वायु के जीव का शरीर है। विना शरीर के जीव नहीं रह सकता। दूसरे खुले मुख रहने से प्रत्यक्ष दोष भी है कि उसको सब कोई समझ सकता है क्योंकि जो कोई बड़े मनुष्य के निकट बात करे तो मुंह के पल्ला लगा रहता है क्योंकि जिससे थूक न उछले वा अपनी दुर्गन्धता का श्वास उनके द्वारा न पहुंचे तो आपड़ों से (आप सरीखे) बुद्धिमान होकर यह क्या प्रश्न पूछा। आपको भी तो यह विचार करना चाहिए कि वेद की पुस्तकों को खुले मुह बाँचना क्या पुस्तक के थुकारा वा दुर्गन्ध-श्वासा नहीं पहुंचती होगी? इसलिए अवश्य आपको उघाड़ (खुले मुख) रहना उचित नहीं और हम तो साधु हैं, हम निरर्थक जोड़ नहीं करते क्योंकि यह बात पक्षपात कहलाती है, धर्म के अतिरिक्त साधु को कुछ प्रयोजन नहीं। कोई हमारे निकट आवे और सुनना चाहे तो सुने । जाने-आने का कुछ प्रयोजन नहीं। हाँ यह पक्की देखी कि कुछ धर्म की बात मानेंगे तो जा भी सकते हैं।

हस्ताक्षर-सिद्धकरण

(देश-हितंषी, खंड १, संख्या ४ पृष्ठ ७ से १० तक)

उत्तर पक्ष । स्वामी दयानन्द जी महाराज की ओर से उत्तर-

उत्तर-जबकि मकान में अग्नि की ज्वाला निकलती है इत्यादि। ये तुम्हारा मुख पट्टी बाँधने का उत्तर अविद्यारूप है क्योंकि बाहर का वायु ही पदार्थों का जीवनहेतु है। बिना इसके संयोग के कोई भी प्राणी नहीं बच सकता और उसके सम्बन्ध के विना अग्नि भी नहीं जल सकती। जैसे किसी प्राणी वा जलती अग्नि को बाहर की वायु से वियुक्त करें तो वह उसी समय मर जाता है। और दीपकादि अग्नि भी बुझ जाता है क्योंकि इसके जलाने आदि का कारण बाहर का वायु है । न मानो तो बन्द कर देख लो। इसलिए यह तुम्हारा अविद्यारूपी

शेष पृष्ठ ७ पर.....

स्वामी दयानन्द सरस्वती–के हितैषी और सहयोगी।

२२ वर्ष के युवा मूल शंकर ने सच्चे शिव की खोज करने के लिए १८४६ ई० में टंकारा जि० मोरवी गुजरात स्थित पिता करसनजी तीवाडी का सुख-सुविधा संपन्न घर छोड़ दिया। पहले ब्रह्मचारी शुद्ध चैतन्य कहलाए। १८४७ ई० में श्रृंगेरी मठ से आ रहे विद्वान स्वामी पूर्णानंद सरस्वती से नर्मदा नदी के तट पर स्थित चनौद-कनयाली स्थान पर संन्यास की दीक्षा ले कर स्वामी दयानन्द सरस्वती प्रसिद्ध हुए। उनकी आध्यात्मिक खोज और वेद प्रचार के काल में जिनका सहयोग उन्हें मिला उनमें से कुछ मुख्य श्रेष्ठ जनों का आभार पूर्वक वर्णन इस प्रकार है।।

योगी गण–शिवानंद गिरि और जवालानन्द पुरी– १८४८,४९ई० में अहमदाबाद के दुधेश्वर मंदिर में इन योगियों ने स्वामी जी को योगविद्या के रहस्यों की शिक्षा दी। जिसके लिए स्वामी जी उनके कृतज्ञ रहे। योग के संबंध में स्वामी जी को आबू पर्वत में भी उपयोगी जानकारी मिली।

अमरलाल जोशी, मथुरा– १८६० ई में जब स्वामी जी मथुरा स्थित दण्डी स्वामी विरजानंद की पाठशाला में पहुंचे, तो गुरु ने स्पष्ट कह दिया पहले अपने खाने और रहने की व्यवस्था कर के आओ। स्वामी जी की जीवनी के लेखक महोदय के शब्दों में मथुरा वासी अमरलाल जोशी ने स्वामी जी के भोजन का जिम्मा ले कर अपने को भी अमर कर लिया। इस के अतिरिक्त हरदेव ने दो रुपए मासिक दूध के लिए और गवर्धन सर्राफ ने चार आने मासिक दीपक के तेल के लिए देने का जिम्मा लिया।

ठाकुर किशन सिंह, कर्णवासः। १८६८ ई० में कर्णवास के मेले में पधारे स्वामी जी ने कठोर शब्दों का प्रयोग करते हुए कहा कि रामलीला आदि में महापुरुषों का स्वांग भरना उन महापुरुषों का उपहास और अपमान है। यह सुनकर मेले में हर वर्ष रामलीला का आयोजन करने वाला राव कर्ण सिंह क्रोधित हो कर स्वामी जी की ओर तलवार ले कर लपका तो स्वामी जी ने तलवार छीन ली उस को जमीन पर जोर से दबा कर दो टुकड़े कर के फैंक दिए। कर्ण सिंह हताशा में कुछ और हिंसा कर पाता इस से पहले ही वहां उपस्थित स्वामी जी के श्रद्धालु ठाकुर किशन सिंह जी स्वामी जी रक्षा में खड़े हो गए और कर्ण सिंह को वहां से खदेड़ दिया।

पं.रघुनाथ प्रसाद कोतवाल, काशी:

१८६९ ई में हुए काशी के प्रसिद्ध शास्त्रार्थ में विषय था मूर्ति पूजा का औचित्य। शास्त्रार्थ में पधारे २७ पौराणिक पंडित जब अकेले स्वामी जी से हारने लगे तो काशी नरेश की मिली भगत से पौराणिक पंडितों को विजयी घोषित कर दिया गया। योजनाबद्ध तरीके से उपस्थित गुंडों ने हिंसा करते हुए स्वामी जी पर गोबर, मिट्टी के ढ़ेले फैंकने शुरू कर दिए। शास्त्रार्थ की व्यवस्था में लगे हुए नगर कोतवाल पंडित रघुनाथ प्रसाद ने स्वयं मूर्ति पूजक होते हुए भी काशी नरेश को लताड़ लगाई स्वामी जी को खिड़की के भीतर करके किवाड़ बंद कर दिए और गुंडों को बल प्रयोग करके खदेड़ कर स्वामी जी की शारीरिक रक्षा सुनिश्चित की। उनका योगदान प्रशंसनीय रहा।।

गुसाईं बलदेव गिरि, सोरों निवासी :

मार्च १८६८ ई को स्वामी जी गढिया पहुंचे। पहले से ही उनके श्रद्धालु सोरों निवासी गुसाईं बलदेव गिरि अपने साथ पण्डित नारायण दत्त चक्रांकित को लिए सेवा में उपस्थित हुए। प्रश्नोत्तर में कुछ उग्र हुए प.नारायण दत्त बाद में शांत हो गये। ओडेसर से एक उग्र मना ठाकुर , दो तलवार धारी सहायक और दो लठैत नौकरों को साथ लिए स्वामी जी के पास आया। उदण्डता पूर्वक प्रत्युत्तर देता रहा तो स्वामी जी उठ कर चले गए। गुसाईं बलदेव गिरि के समझाने पर क्रोधित हुए ठाकुर अपने सेवकों के साथ गुसाईं जी पर आक्रमण कर दिया। अखाड़े के पहलवान रहे

गुसाईं जी ने दोनों नौकरों को हाथ पैर से पकड़ कर दूर पटक दिया उन्हीं की लाठी से उनको पीटा और ठाकुर की पगड़ी और बाल खोल दिए। इस प्रकार अपने आप को संकट में डाल कर स्वामी जी के शरीर और सन्मान की रक्षा की।।

मिस्टर थेन (Mr. Thein) असिस्टेंट कलेक्टर कानपुर:

१८६९ई में स्वामी दयानंद जी कानपुर पधारे और विज्ञापन द्वारा २१ आर्ष ग्रन्थों का परिचय दिया और शेष ग्रंथों को गप्पाष्टक (आठ गप्पें) बताया। शास्त्रार्थ करने के इच्छुक विद्वानों को आमंत्रित किया।.. कानपुर के दो धनी व्यक्तियों प्रयाग नारायण और गुरु प्रसाद ने बड़े बड़े मंदिर बनवाए थे। वह स्वामी जी से मिलने गए। स्वामी जी ने मंदिर निर्माण को धन का अपव्यय बताया। उसकी बजाए धन से पाठशाला बनवाने या गरीब कन्या का विवाह कराने को पुण्य कहा।। इस प्रकार स्वामी जी से नाराज हुए जनों ने किसी तरह से हलधर ओझा और लक्ष्मण शास्त्री को स्वामी जी से शास्त्रार्थ करने के लिए तैयार किया।.. ३१ जुलाई १८६९ को शास्त्रार्थ होना तय हुआ। संस्कृत के ज्ञाता अंग्रेज असिस्टेंट कलेक्टर मिस्टर थेन को मध्यस्थ बनाया गया। विषय था वेद में मूर्ति की आज्ञा है कि नहीं।... हलधर ओझा ने महाभारत का श्लोक पढ़ा कि एक भील ने द्रोणाचार्य की मूर्ति बना कर उसको सामने रख कर धनुर्विद्या सीखी।.. .स्वामी जी का उत्तर था कि एकलव्य तो साधारण भील था कोई ऋषि मुनि नहीं था। दूसरे उस ने कठोर अभ्यास से धनुर्विद्या सीखी न कि मूर्ति से।.. हलधर ने कहा वेद में मूर्ति पूजा का निषेध नहीं है। स्वामी जी ने उत्तर दिया वेद कहता है ईश्वर की प्रतिमा नहीं। उसका स्पष्ट अर्थ है मूर्ति नहीं तो मूर्ति पूजा भी नहीं।.. ..थेन ने स्वामी जी को पूछा आप किस को मानते हैं?.. स्वामी जी ने उत्तर दियाः ''एक ईश्वर को'' मिस्टर थेन बोले ''ठीक है''... टोपी उतार कर स्वामी जी का अभिवादन किया और वहां से उठ कर चले गए... विरोधियों ने दुर्भावना से स्थानीय समाचार पत्र में विज्ञापन दे दिया कि हलधर ओझा की जीत हुई और स्वामी जी की हार हुई। स्वामी जी के हितैषी मिस्टर थेन से मिले और उनको अपना मत लिखित देने को कहा। मिस्टर थेन ने लिख कर दिया ''Gentlemen ! At the time in question I decided in favour of Dayanand Saraswati faqir and I believe his arguments are in accordance with the Vedas- I think he won the day- If you wish] I will give you my reasons for my decision in a few days- Yours obediently- Sd/ Thein- मिस्टर थेन के इस व्यवहार से बहुत संख्या में लोग स्वामी जी के प्रशंसक बन गये।

जज महादेव गोविंद रानाडे और सिटी मजिस्ट्रेट हैमिल्टन, पूना नगरः

१८७५ ई में बम्बई नगर में प्रथम आर्य समाज की स्थापना के पश्चात, जज महादेव गोविंद रानाडे के निमंत्रण पर स्वामी दयानन्द सरस्वती पूना नगर में पधारे। उन्होंने वहां ५४ व्याख्यान दिए जिनमें से १५ व्याख्यान उपदेश मंजरी के शीर्षक से प्रकाशित भी हुए। ५ सितंबर १८७५ ई के दिन आयोजकों ने कृतज्ञता व्यक्त करते हुए स्वामी जी की अभिनन्दन यात्रा निकाली। हजारों की संख्या थी। वर्षा से कीचड़ हो गया था। कयी लकीर के फकीर ब्राह्मण स्वामी जी के विरोधी बन गये थे। उन्होंने एक व्यक्ति को गधे पर बिठा कर उसके गले में जूतों की माला डाल कर ''गर्धभानन्द'' यात्रा निकाली। जब दोनों यात्राएं आमने-सामने पहुंचीं तो विरोधियों ने स्वामी जी के जुलूस पर ईंट, पत्थर, कीचड फैंकना शुरू कर दिया। स्वामी जी की अभिनन्दन यात्रा के संयोजक महादेव गोविंद रानाडे आदि भी कीचड और पत्थर वर्षा का शिकार बने।... पुलिस निष्क्रीय बनी रही। केवल दो चपड़ासी पद धारी दोषियों को मामूली धाराओं में पकड़ा। सिटी मजिस्ट्रेट हैमिल्टन ने उन दोनों को ६-६ महीने के कारावास का दण्ड दिया। अपने निर्णय में सिटी मजिस्ट्रेट हैमिल्टन ने निर्णय में पुलिस की निष्क्रियता की घोर निन्दा करते हुए पूना के जिला मैजिस्ट्रेट से इस बारे कार्यवाई करने की सिफारिश भी की।

खान बहादुर रहीम खां रईस लाहौर नगरः

१८७७ ई में स्वामी दयानंद सरस्वती पंजाब प्रांत की राजधानी लाहौर नगर में पधारे। पहले उन्हें दीवान रत्न चंद की कोठी में ठहराया गया। अपने व्याख्यानों में उन्होंने मूर्ति पूजा और पाखंडों का खंडन किया। पौराणिक पंडितों में खलबली मच गई। ब्रह्म समाजी भी स्वामी जी के विरूद्ध हो गये। उनके दबाव में आकर दीवान रत्न चंद ने स्वामी जी को कोठी खाली करने को कहा। स्वामी जी की समस्या देख कर रईस खान बहादुर रहीम खां ने प्रसन्नता पूर्वक अपनी कोठी स्वामी जी को ठहरने और व्याख्यानों के लिए दे दी।.. स्वामी जी ने एक दिन इस्लाम की आलोचना भी की। इसी कोठी में २४ जून १८७७ ई के दिन आर्य समाज की स्थापना भी हुई और कुछ काल तक सत्संग भी होते रहे।

ठाकुर भोपाल सिंह और डा. लक्षमण दास, आबू पर्वत और अजमेर नगरः

सितंबर १८८३ ई० में जोधपुर प्रवास के दौरान स्वामी जी को पिसा हुआ कांच दूध में मिलाकर पिला दिया गया। यकृत और अंतड़ियों में अत्यधिक पीड़ा के चलते स्वामी जी को आबू पर्वत ले जाया गया। जि अलीगढ़ के ठाकुर भूपाल सिंह पाली से स्वामी जी के साथ आ मिले। अंत समय तक स्वामी जी का मल मूत्र उठाने और मल युक्त उनके कपड़ों को धोने की सेवा पुत्रवत करते रहे।.. आबू पर्वत में सरकारी सेवा में डाक्टर के नाते कार्यरत मूलतः पंजाब से जुडे डा लक्षमण दास ने स्वामी जी को अचेत अवस्था में देखा। उनको दवाई दी जिससे कुछ राहत मिली। स्वामी जी की चेतना लौट आई, हिचकी बंद हो गई, दस्त को भी आराम मिला। डॉ. लक्षमण दास ने इस सेवा के अर्थ अपनी ड्यूटी से छुट्टी मांगी जो नहीं मिली। चिकित्सा करने के लिए अजमेर तक स्वामी जी के साथ आ गये। सरकारी सेवा से त्यागपत्र दे दिया जो मंजूर नहीं हुआ। स्वामी जी ने डा लक्षमण दास को शाल आदि से सन्मानित करना चाहा। लक्षमण दास ने सविनय लेने से इंकार कर दिया और कहा महाराज मेरे पास धन होता तो आप के शरीर के एक एक लोम पर न्यौछावर कर देता।। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के हितैषी इन उच्च सोच वाले और श्रद्धालु सज्जनों को भी सदा स्मरण किया जाता रहेगा

लाहौर की दो प्रमुख आर्य समाजें : आर्यसमाज अनारकली एवं आर्यसमाज वच्छोवाली

-स्व. विश्वनाथ

पाकिस्तान बनने से पहले पंजाब की दो प्रमुख आर्यसमाजें थीं जहां से पंजाब ही नहीं, किसी सीमा तक देश भर के आर्यजगत् की गतिविधियों की कल्पना की जाती थी और उन्हें साकार किया जाता था। आर्यसमाज अनारकली आर्य प्रादेशिक सभा की प्रमुख समाज थी उसके प्रेरणा स्त्रोत महात्मा हंसराज जी थे। दूसरी थी- आर्यसमाज वच्छोवाली जिसकी धुरी थे महाशय कृष्ण जी जो दैनिक प्रताप और साप्ताहिक प्रकाश के सम्पादक और संचालक थे।

आर्यसमाज अनारकली

पहले आर्य समाज अनारकली की बात करूंगा। क्योंकि मेरा घर और कार्यालय, 'आर्य-पुस्तकालय' दोनों अनारकली बाजार के साथ लगती हुई हस्पताल रोड पर स्थित थे इसलिए विशेष आयोजन हो तो अनारकली समाज में जाता ही था। नाम तो अनारकली था परन्तु समाज अनारकली बाजार में नहीं थी। वह निकट की ही एक सड़क गणपत रोड पर बहुत बड़े भवन में स्थित थी। आर्यसमाज का अपना विशाल भवन था। इसकी ऊपरी मंजिल पर दैनिक उर्दू मिलाप का कार्य चलता था जिसके सर्वेसर्वा महाशय खुशहाल चंद खुर्सन्द जी थे जो उन दिनों भी अपना पूरा समय आर्यसमाज को देते थे और बाद में संन्यास लेकर जिन्होंने महात्मा आनन्द स्वामी के नाम से आर्यसमाज की अविस्मरणीय सेवा की। गणपत रोड पर ही एक मकान की पहली मंजिल पर उर्दू साप्ताहिक 'आर्य गजट' का कार्यालय था जिसके सम्पादक महात्मा हंसराज जी थे। कालान्तर में लाला खुशहाल चंद जी सम्पादक बने। उन दिनों उर्दू का बोलबाला था, उर्दू ही राजभाषा थी, इसलिए आर्यसमाज के समाचार पत्र भी उर्दू में ही छपा करते थे।

आर्यसमाज अनारकली में प्रवेश करने के लिए एक बड़े गलियारे में से गुजरना पड़ता था। इसे पार करके एक बड़ा आंगन और इसके बाद आर्यसमाज का विशाल भवन। अतिथियों के ठहरने के लिए कुछ कमरों की व्यवस्था थी। वहीं मैंने पहली बार वीतराग स्वामी सर्वदानन्द जी के दर्शन किये थे। रविवार के साप्ताहिक सत्संग में डी०ए०वी० आन्दोलन से जुड़े सभी प्रमुख व्यक्ति नियम से आते थे जिनमें जस्टिस मेहरचंद महाजन प्रिंसीपल श्री जीद्र एलद्र दत्ता, प्रिंसीपल मेहर जी, बक्षी रामरतन जी, लाला सूरजभान जी, प्रो० दीवानचंद शर्मा, प्रो० चारूदेव जी, प्रो० ए० एन० बाली आदि अनेकानेक महापुरुष नियम से आते थे। महात्मा जी अपनी उपस्थिति से सदा यह सन्देश देते थे- सत्संग में आना बड़ा महत्वपूर्ण है। उनके अपने उच्च उदाहरण से भी सभी प्रभावित होते थे। उन दिनों उपस्थिति बहुत अधिक होती थी और पूरा हाल भर जाता था। कार्यक्रम की शुरुआत तो वैसी ही होती थी जो आज है। पहले यज्ञ, फिर प्रार्थना, वेद प्रवचन, सामयिक विषयों पर भाषण और बाद में मन्त्री द्वारा आर्यसमाज की गतिविधियों की सूचना और समाचार। मेरी स्मृति के अनुसार इस विशाल भवन में बिजली के पंखे लगे हुए थे। बड़ी बात यह है कि सभी आर्यपुरुष अपनी आन्तरिक प्रेरणा से नियमपूर्वक साप्ताहिक सत्संग में बड़े उत्साह से भाग लेते थे।

पाकिस्तान बन जाने के तीन चार वर्ष बाद मुझे पाकिस्तान जाने का अवसर मिला। वहां आर्यसमाज मन्दिर अनारकली की जो दुर्दशा देखी, हृदय रो उठा। मन्दिर के भव्य भवन को मुसलमान शरणार्थियों का अड्डा बना दिया गया था। मन्दिर के चारों ओर गन्दगी फैली थी। मन्दिर के सबसे ऊपर जो गुम्बद था, जिस पर ओ३म् ध्वज फहरा करता, वह टूटा हुआ था। सीलन और दुर्गन्ध में ही वहां लोग रह रहे थे। जैसे भारतवर्ष में महात्मा गांधी और नेहरू जी ने मस्जिदों की रक्षा के लिए पूरी शक्ति लगा दी थी कि पंजाब से आने वाले शरणार्थी वहां घुस न पायें, वैसे पाकिस्तान ने क्यों नहीं किया। वहां तो डी०ए०वी० कॉलेज लाहौर का नाम भी बदलकर इस्लामिया कालेज रख दिया गया और प्रवेश द्वार में घुसते ही कालेज के बड़े लान में सफेद संगमरमर की नई मस्जिद बना दी गई। इन सब बातों पर अलग से लिखूंगा। आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में कभी-कभी प्रिंसीपल दीवानचंद जी (कानपुर वाले), सर गोकुल चंद नारंग आदि महापुरुष आया करते थे और भाषण देते थे। बक्षी सर टेकचंद जी शायद इसलिए नहीं आते थे क्योंकि वे पंजाब हाईकोर्ट के जज थे। कैसे थे वे दिन, कैसा था वह उत्साह, कैसी थी आर्यसमाज के प्रति दीवानगी उन दिनों।

यहां पर एक बात का और जिक्र करना चाहूंगा कि पंजाब के आर्य युवकों को एक झण्डे के तले लाने के लिए आर्य युवक समाज की स्थापना लाहौर में हुई थी जिसमें हम चार युवक सक्रिय थे- श्री देवराज चड्ढा, श्री यश जी (सुपुत्र महात्मा आनन्द स्वामी), श्री ओंकार नाथ जी (मुम्बई वाले) और मैं। मुझे याद है कि आर्यसमाज अनारकली की वार्षिकोत्सव के दिनों हम अपना विशेष अधिवेशन करते थे जिसमें पंजाब के सभी जिलों से आर्य युवक प्रतिनिधि बड़े उत्साह से भाग लेने आते थे।

आर्यसमाज वच्छोवाली-

अब आर्यसमाज वच्छोवाली की कुछ स्मृतियां। इस समाज की स्थापना महर्षि दयानन्द जी के जीवनकाल में ही लाहौर में हो गई थी। लाहौर के चारों ओर एक बड़ी भारी मजबूत फसील (दीवार) थी जिसमें १२ दरवाजे थे जैसे मोरी दरवाजा, भाटी दरवाजा, मोची दरवाजा इत्यादि। इनमें शाह आलमी दरवाजा भी था जिसके अन्दर अनेकों बाजारों, गली-कूचों में हिन्दुओं के परिवार रहते थे और हिन्दुओं की दुकानें भी थीं। इसके अन्दर एक गली का नाम वच्छोवाली था। महाराजा रणजीत सिंह के समय की एक विशाल हवेली में यह आर्यसमाज स्थित था जो उस समय की स्थापत्य-कला का नमूना था। बेसमेंट का रिवाज तो अब चला है परन्तु आर्यसमाज वच्छोवाली में एक बेसमेंट भी था और गुरुद्वारों की भांति अनेक सीढ़ियां ऊपर की ओर चढ़कर प्रवेश द्वार था जिसके अन्दर एक मुख्य हाल और तीन दिशाओं में तीन छोटे हाल थे जिनमें एक महिलाओं के लिए सुरक्षित था। उन दिनों आर्यसमाज के गणमान्य सभासद हाथों में बहुत बड़े कपड़े के झालरदार पंखे लेकर उन्हें झुलाया करते थे जिससे श्रोतागण को गर्मी का अहसास कम हो और वे सत्संग में शान्तिपूर्वक भाग ले सकें। एक ही सयम में आठ-दस व्यक्ति साप्ताहिक सत्संग में अलग-अलग स्थानों पर इन पंखों को झुलाते थे। साप्ताहिक सत्संग में नगर के गणमान्य व्यक्ति जिनमें महाशय कृष्ण जी, पं० ठाकुर दत्त जी अमृतधारा, पण्डित ठाकुर दत्त वैद्य मुलतानी, पण्डित हीरानन्द जी, पायनियर स्पोर्ट्स के रोशनलाल जी, लाहौर के पोस्ट मास्टर भाटिया जी, रेलवे के बड़े उच्च अधिकारी सरदार मेहर सिंह जी और ऐसे ही कितने अनेक व्यक्ति नियम से आते थे।

लाहौर में आर्यसमाज का केन्द्रीय कार्यालय, गुरुदत्त भवन रावी रोड पर स्थित था जहां आर्य प्रतिनिधि सभा का विशाल कार्यालय भी था। वहां से स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, स्वामी वेदानन्द जी, पं० प्रियरत्न जी, पण्डित बुद्धदेव जी विद्यालंकार, पण्डित ज्ञानचंद जी आर्य सेवक, पण्डित विश्वम्भरनाथ जी, आदि नियम से आते थे यदि वे लाहौर से बाहर नहीं गये हों। पूरा भवन खचाखच भरा रहता था। उन दिनों श्री देवेन्द्रनाथ अवस्थी एडवोकेट समाज में मन्त्री थे और मैं सहमन्त्री था।

वार्षिकोत्सव की धूम-

इन दोनों आर्यसमाजों का वार्षिकोत्सव नवम्बर के अन्तिम सप्ताह में एक साथ ही होता था। वच्छोवाली का वार्षिकोत्सव गुरुदत्त भवन के विशाल प्रांगण में होता था और अनारकली का डी०ए०वी० मिडल स्कूल लाहौर की ग्राउण्ड में और बाद में डी०ए०वी० हाई स्कूल के ग्राउण्ड में होने लगा। पंजाब भर के आर्यसमाजी नवम्बर में आने का कार्यक्रम समय से पहले ही बना लेते थे जहां उन्हें एक से बढ़कर एक विद्वान्, संन्यासी और प्राध्यापकों के विचार सुनने को मिलते थे और साथ ही विख्यात भजन मण्डलियों के भजन जिनमें चिमटा भजन मण्डली भी होती थी। कविवर कुंवर सुखलाल जैसे अद्वितीय कवि भी हुआ करते थे जो श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर देते थे। लोग रात के ११ बजे तक यह कार्यक्रम सुनते थे। पिछली पंक्तियों में खड़े लोग सुनते नहीं थकते थे। गुरुदत्त भवन और डी०ए०वी० को जोड़ने वाली सड़क पर भीड़ का तांता लगा रहता था सैकड़ों आर्य पुरुष, देवियां और बच्चे उत्साह से इधर से उधर जाते रहते थे- एक उत्सव से दूसरे उत्सव की ओर। वह एक दर्शनीय दृश्य होता था। अब तो बस इसकी यादें रह गई हैं। सम्भवतः आज की पीढ़ी को इन सब पर विश्वास करना कठिन हो परन्तु यह आर्यसमाज के स्वर्ण युग की झांकी है जो अब स्मृति शेष रह गई है।

वार्षिक उत्सव के प्रारम्भ में शुक्रवार के दिन विशाल नगर कीर्तन निकाला जाता था जो सारे नगर की परिक्रमा करता था और जिसकी शान और सजधज देखते बनती थी। प्रत्येक जिले से आर्यसज्जन अपनी-अपनी मण्डली बनाकर ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज का गुणगान करते हुए पैदल चलते थे। ऐसी मण्डलियां ५० से अधिक ही होती थीं। अलग-अलग जिलों से आने के कारण उनके पहनावे और बोली में भी काफी अन्तर होता था। जैसे फ्रंटियर के आर्यसमाजी और मुलतान से आने वाले सज्जन, दोनों का पहनावा और उच्चारण अपनी विशेषता लिए हुए होता था, मानो अनेकता में एकता का दर्शन हो। इस जुलूस में आर्यसमाज के प्रमुख विचारक और प्रचारक जगह-जगह प्रत्येक चौक में गाड़ी खड़ी करके वेद प्रचार करते थे। इसी प्रकार अनेक बैलगाड़ियों पर प्रसिद्ध गायक और भजन मण्डली पूरी साज-सज्जा के साथ भजन गाते थे। डी०ए०वी० कालेज और डी०ए०वी० स्कूलों के विद्यार्थी और अध्यापक केसरी रंग की पगड़ियां पहने हुए पंक्तिबद्ध होकर चलते थे और "हम दयानन्द के सैनिक हैं, दुनिया में धूम मचा देंगे" का गान करते थे तो एक समां बंध जाता था। आप सम्भवतः आश्चर्य करें कि डी०ए०वी० कालेज के सभी विद्यार्थियों की हाजिरी ली जाती थी ताकि प्रत्येक विद्यार्थी का नगर-कीर्तन में सम्मिलित होना सुनिश्चित हो। मुस्लिम बहुल लाहौर शहर में इस नगर कीर्तन के कारण मुसलमानों के हृदय पर परोक्ष रूप से आतंक भी छा जाता था। महात्मा हंसराज जी प्रायः अनारकली में प्रसिद्ध दुकान 'भल्ले दी हट्टी' के मुख्यद्वार पर बैठकर इस शोभायात्रा का आनन्द लेते थे। गलियों, बाजारों के दोनों ओर दुकानों और छतों से भी नर-नारी बच्चे उस नगर कीर्तन को देखते थे। इस भव्य यात्रा में शारीरिक व्यायाम के करतब, गतकों के खेल आदि भी देखने को मिलते थे। वार्षिकोत्सव शनिवार और रविवार को होता था, परन्तु लाहौर के गली-मोहल्लों में आर्यपुरुषों और देवियों की प्रभात फेरिया एक सप्ताह पहले से ही सबको सूचना देने के लिए शुरू हो जाती थी। डी०ए०वी० के अध्यापक पन्द्रह दिन पहले ही सारे नगर में वार्षिकोत्सव की सूचना देने वाले कपड़े के बोर्ड सड़कों के आर-पार लगा देते थे। आज न वे दिन रहे, न उत्साह, न धर्म के प्रति सच्ची श्रद्धा।

-(स्व. विश्वनाथ जी के आलेखों से) स्त्रोत- टंकारा समाचार : श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र का अगस्त २०२० का अंक

प्रस्तुति- प्रियांशु सेठ

यहूदी धर्म का वैदिक इतिहास

विश्व के केवल दो समुदाय ऐसे हैं, जो पुनर्जन्म को मानते हैं, एक तो हमारे यदुवंशी यहूदी भाई, और एक हिन्दू-

यहूदी पंथा को Judaism कहा जाता है।

वह Yeduism का अपभ्रंश है।

सौराष्ट्र यह यदु लोगों का प्रदेश था।

श्रीकृष्ण की द्वारिका उसी प्रदेश में है।

वहाँ के शासक जाडेजा कहलाते हैं।

जाडेजा यह ''यदु-ज'' शब्द का वैसा ही अपभ्रंश है जैसे Judaism है।

जाडेजा और Judaism दोनों का अर्थ है यदु उर्फ जदुकुलवंशी।

उसी पंथ का दूसरा नाम है Xionism.

उसका उच्चार है- ''जायोनिज्म्'' जो ''देवनिज्म्'' का अपभ्रंश है।

भगवान कृष्ण देव थे अत : उनका यदुपंथ देवपंथ कहलाने लगा।

द या ध का अन्य देशों में ''ज'' उच्चार होने लगा।

उसी प्रकार ''देवनिजम्'' का उच्चार ज्ञायोनिजम हुआ।

यहूदी परम्परा के प्रथम नेता अब्रह्म माने गए हैं।

यह ''ब्रह्म'' शब्द का अपभ्रंश है।

उनके दूसरे नेता ''मोजेस्'' कहलाते हैं,

जो महेश शब्द का विकृत उच्चार है।

मोझेस् की जन्मकथा कृष्ण की जन्मकथा से मेल खाती है, अत : वह महा-ईश भगवान कृष्ण ही हैं, इसके सम्बन्ध में किसी को शंका नहीं रहनी चाहिए।

महाभारतीय युद्ध के पश्चात् द्वारिकाप्रदेश में शासकों के अभाव से लूटपाट, दंगे आदि आरम्भ हुए।

धरती कम्प आदि से सागर तटवर्ती प्रदेश जलमग्न होने लगा। अत : यादव लोग टोलियाँ बनाकर अन्यत्र जा बसने के लिए निकल पड़े। कुल २२ टोलियों में वे निकले।

उनमें से १० टोलियाँ उत्तर की ओर कश्मीर की दिशा में चल पड़ी और कश्मीर, रूस आदि प्रदेशों में जा बसीं।

अन्य १२ टोलियाँ इराक, सीरिया, पॅलेस्टाईन, जेरूसलेम, ईजिप्त, ग्रीस आदि देशों में जा बसीं।

मध्य एशिया के १२ देशों में यदुवंशियों की वही १२ टोलियाँ हैं। वही यहूदियों की १२ टोलियाँ कहलाती हैं। भगवान कृष्ण के अवतार समाप्ति के पश्चात् यहूदी लोगों को जब कठिन और भीषण अवस्था में द्वारिका प्रदेश त्यागना पड़ा तभी से यहूदी लोगों ने मातृभूमि से बिछड़ने के दिन गिनने शुरू किए। उसी को यहूदियों का **passover** गक कहा जाता है। उसका अर्थ है मातृभूमि त्यागने के समय से आरम्भ की गई कालगणना।

अब कोई बताएं की यहूदियो की मातृभूमि कौनसी थी?

यहूदी बायबल में कृष्ण का रुबाल नाम स्पष्टतः उल्लेखित है।

'हिब्रू' भाषा यानी ''हरिबूते इति हिब्रू''

यहूदियों की भाषा का नाम ''हिब्रू'' है। यहूदियों के आंग्ल ज्ञानकोष का नाम है **Encyclopaedia Judaica.**

उसमें ''हिब्रू'' शब्द का विवरण देते हुए कहा है कि उस शब्द का पहला अक्षर जो ''ह'' है वह परमात्मा के नाम का संक्षिप्त रूप है।

अब देखिए कि ऊपर लिखे विवरण में दो न्यून हैं।

एक न्यून तो यह है कि ''ह'' से निर्देशित होने वाला यहूदियों के भगवान का पूरा नाम क्या है? यह उन्होंने स्पष्ट नहीं किया स करेंगे भी कैसे, जब ज्ञानकोषकारों का ही ज्ञान अधूरा है।

हम वैदिक संस्कृति के आधार पर उस कमी को दूर करते हैं। ''हरि'' यह कृष्ण का नाम है, उसी का ''ह'' अद्याक्षर है। अब दूसरा न्यून यह है कि यहूदी ज्ञानकोष वालों ने हब्रू शब्द में ब्रू अक्षर क्यों लगा है? यह कहा ही नहीं। उस महत्त्वपूर्ण बात का उन्हें ज्ञान न होने से वे उसे टाल गए। ब्रू अक्षर का तो बड़ा महत्त्व है। ''ब्रूरूते'' यानी बोलता है इस संस्कृत शब्द का वह अद्याक्षर है। अतः हब्रू का अर्थ है ''हरि (यानी कृष्ण) बोलता था वह भाषा''। ठीक इसी व्याख्यानुसार संस्कृत और हब्रू में बड़ी समानता है।

यहूदी लोगों वा धर्मचिह्न यहूदी लोगों के मन्दिर को **Synagogue** कहते हैं।

उसका वर्तमान उच्चार ''सिनेगॉग'' मूल संस्कृत ''संगम'' शब्द है।

''संगम'' शब्द का अर्थ है ''सारे मिलकर प्रार्थना करना''।

संकीर्तन, संतसमागम आदि शब्दों का जो अर्थ है वही सिनेगॉग उर्फ संगम शब्द का अर्थ है।

यहूदी मन्दिरों पर षट्कोण चिह्न खींचा जाता है।

वह वैदिक संस्कृति का शक्तिचक्र है।

देवीभक्त उस चिह्न को देवी का प्रतीक मानकर उसे पूजते हैं।

वह एक तांत्रिक चिह्न है।

घर के प्रवेश द्वार के अगले आँगन में हिन्दु महिलाएं रंगोली में वह चिह्न खींचती हैं।

दिल्ली में हुमायूं की कब्र कही जाने वाली जो विशाल इमारत है वह देवीभवानी का मन्दिर था। उसके ऊपरले भाग में चारों तरफ बीसों शक्तिचक्र संगमरमर प्रस्तर पट्टियों से जड़ दिए गए हैं।

यहूदी लोगों में **David** नाम होता है वह ''देवि + द'' यानी देवी का दिया पुत्र इस अर्थ से डेविदु उर्फ डेविड कहलाता है। अरबों में उसी का अपभ्रंश दाऊद हुआ है। अतः हिब्रू और अरबी दोनों संस्कृतोद्भव भाषाएँ हैं।

भारत में यादव का उच्चार जाधव और जाडेजा जैसे बना वैसे ही यदु लोग यहूदी, ज्यू डेइस्टस्, ज्यू और झायोनिटस् कहलाते हैं।

निर्देशित देश ज्यू लोग जब द्वारिका से निकल पड़े तो उन्हें साक्षात्कार हुआ जिसमें उन्हें कहा गया कि **"Canaan** प्रदेश तुम्हारा होगा''।

''कानान'' यह कृष्ण कन्हैया जैसा ही कृष्ण प्रदेश का द्योतक था।

यहूदी लोगों को भविष्यवाणी के अनुसार भटकते - भटकते सन् १९४६ में उनकी अपनी भूमि प्राप्त हो ही गई जिसका नाम उन्होंने **Isreal** रखा जो **Isr**=ईश्वर और **ael** = आलय इस प्रकार का ''ईश्वरालय'' संस्कृत शब्द है।

यह एक और प्रमाण है कि यहूदी लोगों की परम्परा वैदिक संस्कृति और संस्कृत भाषा से निकली है।

हिटलर उनसे टकराकर नामशेष हो गया। मुसलमान भी यहूदियों से टकराने के लिए आतुर हैं तो उनका भी हिटलर जैसा ही अन्त होगा।

यहूदी ग्रन्थ की भविष्यवाणी कुस्ती बायबल का Testament नाम का जो पूर्व खण्ड है उससे समय समय पर ईश्वर का अवतरण होता है ऐसी भविष्यवाणी है। वह भगवद्गीता से ही यहूदी धर्मग्रन्थ में उतर आई है। भगवद्गीता में भगवान कहते हैं।

यदा यदा हि धर्मस्यग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्''।

यहूदी नेता डवेमे की जन्मकथा श्रीकृष्ण की जन्मकथा जैसी ही है। और तो और श्रीकृष्ण का जैसा विराट रूप कुरुक्षेत्र में अर्जुन ने देखा वैसा ही विराट रूप यहूदी लोगों ने रेगिस्तान में मोझेस का देखा, ऐसी यहूदियों की दन्तकथा है।

पूर्ववर्ती पर्वत यदुईशालयम् उर्फ जेरूसलेम नगरी में दो पहाड़ियाँ हैं।

उनमें से पूर्व वी पहाड़ी पर **#Dome_on_the_Rock** और अलअक्सा नाम के दो प्राचीन वैदिक मन्दिर हैं, जो सातवीं शताब्दी से मुसलमानों के कब्जे में होने के कारण मस्जिदें कहलाती हैं।

Dome on the Rock स्वयम्भू महादेव का मन्दिर है और अल्अक्सा अक्षय्य भगवान कृष्ण का मन्दिर है, एवं शक्तिपीठ भी। पूर्ववर्ती पहाड़ी पर ये मन्दिर बनाए जाना उनकी वैदिक विशेषता का द्योतक है।

जिस प्रकार भारत में दो कुटुम्बों के बुजुर्गों से विवाह प्रस्ताव सम्मत होने पर युवक - युवतियों के विवाह होते हैं वैसी ही प्रथा - यहूदियों में भी है।

वे भी भारतीयों की तरह प्रेम - विवाह को अच्छा नहीं समझते।

वैदिक विवाहों के लिए मण्डप बनाए जाते हैं।

यहूदियों में भी वही प्रथा है।

वे भी मण्डपों में विवाह - संस्कार कराना शुभ समझते हैं।

यहूदियों में भी अनेक दीप लगाकर वैसा ही एक त्यौहार मनाया जाता है जैसे भारतीय लोग दीपावली मनाते हैं। वृक्ष - पूजन वैदिक संस्कृति में जिस प्रकार तुलसी, पीपल, बड़ आदि वृक्षों का पूजन किया जाता है, उन्हें पानी दिया जाता है और उनकी परिक्रमा की जाती है ल, वैसे ही यहूदी भी वृक्षों को पूज्य मानते हैं।

यही शत्रु मुसलमान लोग यहूदियों को उतना ही कट्टर शत्रु मानते हैं जितना वे भारत के हिन्दू लोगों को मानते हैं।

यहूदियों में वेदों का उल्लेख मार्कोपोलो के प्रवास वर्णन के ग्रन्थ में पृष्ठ ३४६ पर एक टिप्पणी इस प्रकार है ''Much has been written about the ancient settlement of Jews at Kaifungfu ¼in China½ - One of the most interesting papers on the subject is in Chinese Repository] Vol - XX - It gives the translation of a Chinese Jewish inscription -Here is a passage with respect to the Israeli tish religion we find an inquiry that its first ancestor] Adam came originally from India and that during the ¼period of the½ Chau State the sacred writings were already in eistence - - The sacred writings embodying eternal reason consist of 53 sections - The principles therein contained are very abstruse and the e ternal reason therein revealed is very mysterious being treated with the same veneration as Heaven - The founder of the religion is Abraham] who is considered the first teacher of it - Then came Moses] who established the law] and handed down the sacred writings - After his time this religion entered China -'' '' इसका हिन्दी अनुवाद इस प्रकार होगा--''चीन के कायपुंगफू नगर में यहूदियों की एक बस्ती थी जिसके बारे में बहुत कुछ लिखा जा चुका है । उसमें एक बड़ा ही रोचक लेख #Chinese_Repository नाम के ग्रन्थ के बीसवें खण्ड में सम्मिलित है । चीन में प्राप्त एक यहूदी शिलालेख का वह अनुवाद है । उसमें ऐसा उल्लेख है कि '' यहूदियों के मूल धर्मसंस्थापक अँडम् (यह ''आदिम'' ऐसा संस्कृत शब्द है। उसी से इस्लामी भाषा में आदमी यह शब्द बना है) भारत - निवासी था। शासन के पूर्व ही उनके पवित्र ग्रन्थ उपलब्ध हो गए थे। उन ग्रन्थों में अनादि, अनन्त तत्स्व का विवरण ५३ भागों में प्रस्तुत है। उसके तत्त्व बड़े गूढ़ हैं और उसमें दिया अनादि - अनन्त का वर्णन बड़ा रहस्यमय है । प्रत्यक्ष परमात्मा के जितना ही उनका महत्त्व माना गया है ।

-साभार & VEDIC HERITAGE OF THE WORLD BY P- N- OAK & HISTORIAN-

नवरात्रि पर्व का वैज्ञानिक आधार

डॉ० डी के गर्ग

नवरात्रि पर्व साल में दो बार मनाये जाने वाला भारतीय पर्व है , जो सृष्टि के आदिकाल से मनाया जाता रहा है । एक नवरात्रि अश्वनि नक्षत्र यानी शारदीय नवरात्रि और दूसरा चैत्र नवरात्रि होती है।

पौराणिक मान्यताः–

भगवान श्रीराम ने रावण से युद्ध करने से पहले अपनी विजय के लिए दुर्गापूजा का आयोजन किया था। वह माँ के आर्शीवाद के लिए इतंजार नहीं करना चाहते थे इसलिए उन्होंने दुर्गापूजा का आयोजन किया और तब से ही हर साल दो बार नवरात्रि का आयोजन होने लगा। कहा जाता है कि इन दिनों में मन से माँ दुर्गा की पूजा करने से हर मनोकामनाएं पूरी होती है।

नवरात्रि में कन्याओं को देवी का स्वरुप मानकर हम उनकी पूजा करते हैं इन दिनों में शक्ति के नौ रूपों की पूजा अर्चना की जाती है इसलिए इस त्योहार को नौ दिनों तक मनाया जाता है और दशमी के दिन दशहरा के नौ रूप में भी मनाया जाता है !

नवरात्रि पर्व की वास्तविकता का विश्लेषणः–

नवरात्रि हमेशा दो मुख्य मौसमों के संक्रमण काल में आती है। यानि जब सर्दी के बाद गर्मी शुरु हो रही होती है तब चैत्र मास में और दूसरे जब गर्मी- वर्षा के बाद सर्दी शुरु हो रही होती है तब।

१. जाड़े के बाद।

२. वर्षा के बाद।

ये ही वो समय हैं जब हमारे बीमार पड़ने के ज्यादा अवसर रहते हैं। आपने देखा होगा डाक्टरों के यहाँ इसी समय सबसे ज्यादा मरीजों की भीड़ होती है ।

ऋतु परिवर्तन के दो मास बीतने वाले के अंतिम ७ दिन और आने वाले के प्रथम ७ दिन इस १४ दिन के समय को ऋतु संधि कहते हैं ।इनके दोनों नवरात्रों यानी जाड़े और वर्षा ऋतु के बाद जब ऋतु परिवर्तन होता है यानी ऋतु संधिकाल होता है हमारी सभी अग्नि जठराग्नि और भूताग्नि कम होने के साथ-साथ रोग प्रतिरोधक क्षमता में भी कमी आ जाती है और प्राप्त भोज्य सामग्री के दूषित होने की संभावना अधिक होती है। इन कारणों के चलते इस ऋतुसंधिकाल और इसके आसपास के समय में विभिन्न रोग होने की संभावना बेतहासा बढ़ जाती है। आप लोगों ने देखा भी होगा आजकल इस मौसम में ज्वर अतिसार आंत्र ज्वर, पेट में जलन, खट्टी डकार, डेंगू, बुखार, **मलेरिया. वायरल बुखार, एलेर्जी आदि-आदि कितने रोग पैदा हो जाते है।**

नवरात्र एक आयुर्वेदिक पर्व है–

इस प्रथा के पीछे एक बड़ा आयुर्वेदीय वैज्ञानिक और स्वास्थ्य सम्बंधित तथ्य छिपा है । नवरात्रि हमेशा दो मुख्य मौसमों के संक्रमण काल में आती है। एक नवरात्रि अश्वनि नक्षत्र यानी शारदीय नवरात्र और दूसरा चैत्र नवरात्रि होती है। नवरात्रि होने के पीछे कुछ आध्यात्मिक, प्राकृतिक, वैज्ञानिक कारण माने जाते हैं। दोनों ही नवरात्रि का अपना एक अलग महत्व होता है।

प्राकृतिक आधार पर नवरात्रि को देखें तो ये ग्रीष्म और सर्दियों की शुरुआत से पहले होती है। प्रकृति के परिवर्तन का ये जश्न होता है। वैज्ञानिक रूप से मार्च और अप्रैल के बीच सितंबर और अक्टूबर के बीच दिन की लंबाई रात की लंबाई के बराबर होती है वैज्ञानिक आधार पर इसी समय पर नवरात्रि का त्यौहार मनाया जाता है।

आयुर्वेद दो सिद्धांतों पर कार्य करता है।

१. मनुष्य के स्वास्थ्य की रक्षा।

२. रोगी के रोग की चिकित्सा।

जब नवरात्रि पर्व और इसको मनाने की बात आती है तो मुख्यत तीन शब्द सामने आते हैः नवरात्रि व्रत, साथ में उपवास व जागरण, नौ दिन आदि शब्द भी। इसलिए इनके वास्तविक अर्थ पर ध्यान देना चाहिए।

१. नौ रात्रियों का तात्पर्य?

नौ रात्रियों का वैदिक साहित्य में सुन्दर वर्णन है। "नवद्वारे पुरेदेहि" इसका तात्पर्य है नौ दरवाजों का नगर ही हमारा शरीर है। शरीर में नौ द्वार होते है - दो कान, दो आंखें, दो नासाछिद्र, एक मुख और दो उपस्थ इन्द्रि (मल द्वार मूत्र द्वार) इस प्रकार शरीर में नौ द्वार है। नौ द्वारों में जो अंधकार छा गया है, हमें अनुष्ठान करते हुए एक-एक रात्रि में, एक-एक इन्द्रियों के द्वार के ऊपर विचारना चाहिए कि उनमें किस-किस प्रकार की आभाएँ हैं तथा उनका किस प्रकार का विज्ञान है? इसी का नाम नवरात्रि है।

२. जागरण का अभिप्रायः यहाँ रात्रि का का तात्पर्य है अंधकार। अंधकार से प्रकाश में लाने को ही जागरण कहा जाता है। जागरण का अभिप्राय यह है कि जो मानव जागरूक रहता है उसके यहाँ रात्रि जैसी कोई वस्तु नहीं होती। रात्रि तो उनके लिए होती है जो जागरूक नहीं रहते। अतः जो आत्मा से जागरूक हो जाते है वे प्रभु के राष्ट्र में चले जाते हैं और वे नवरात्रियों में नहीं आते।

माता के गर्भस्थल में रहने के जो नवमास है वे रात्रि के ही रूप है क्योंकि वहाँ पर भी अंधकार रहता है, वहाँ पर रूद्र रमण करता है और वहाँ पर मूत्रों की मलिनता रहती है । उसमें आत्मा नवमास, वास करके शरीर का निर्माण करता है। वहाँ पर भयंकर अंधकार है। अतः जो मानव नौ द्वारों से जागरूक रहकर उनमें अशुद्धता नहीं आने देता वह मानव नव मास के इस अंधकार में नहीं जाता, जहाँ मानव का महाकष्टमय जीवन होता है। वहाँ इतना भयंकर अंधकार होता है कि मानव न तो वहाँ पर कोई विचार-विनिमय कर सकता है, न ही कोई अनुसन्धान कर सकता है और न विज्ञान में जा सकता है। इस अंधकार को नष्ट करने के लिए ऋषि-मुनियों ने अपना अनुष्ठान किया। गृहस्थियों में पति-पत्नी को जीवन में अनुष्ठान करने का उपदेश दिया। अनुष्ठान में दैव-यज्ञ करे, दैव-यज्ञ का अभिप्राय है यह है कि ज्योति को जागरूक करे। दैविक ज्योति का अभिप्राय यह है कि दैविक ज्ञान-विज्ञान को अपने में भरण करने का प्रयास करे। वही आनंदमयी ज्योति, जिसको जानने के लिए ऋषि-मुनियों ने प्रयत्न किया। इसमें प्रकृति माता की उपासना की जाती है, जिससे वायुमंडल वाला वातावरण शुद्ध हो और अन्न दूषित न हो। इस समय माता पृथ्वी के गर्भ में नाना प्रकार की वनस्पतियाँ परिपक्व होती है। इसी नाते बुद्धिजीवी प्राणी माँ दुर्गे की याचना करते है अर्थात प्रकृति की उपासना करता है कि हे माँ ! तू इन ममतामयी इन वनस्पतियों को हमारे गृह में भरण कर दे।

नवरात्रि पर्व पर नौ दिन के व्रत के पीछे का वैज्ञानिक कारणः

हमारे शरीर में स्थित नौ द्वार है- आँख, नाक, कान, द्वार, मुँह, गुदा एवं मूत्राशय ये नौ द्वार हमको स्वास्थ्य रखने में मदद करते है बहार से रोग के जीवाणु को शरीर में प्रवेश करने से रोकते है अच्छी वायु का सेवन करते है और शरीर से गंन्दी वायु और मलमूत्र को बाहर निकलते है सभी नौ द्वारों को शुद्ध रखना जरुरी है दूसरे एक ऋतु से शरीर दूसरी ऋतु में प्रवेश करता है जिसके लिए शरीर के नौ द्वारों की मशीन को कुछ विश्राम देना जरुरी है नहीं तो मौसम बदलने के साथ नौ बीमारियों की सम्भावना हो जाती है।

इसलिए हमारे मनीषियों ने धार्मिक अनुष्ठान के साथ नौ दिन उपवास रखने का भी प्रावधान किया। इन नौ दिनों में यदि तरीके से केवल फलाहार करके उपवास कर लिया जाये तो शरीर से पिछले ६ महीने में एकत्रित विकार निकल जाते हैं और शरीर अगले ६ महीने के लिये स्वस्थ्य रहने के लिए तैयार हो जाता है।साथ में हम जो धार्मिक अनुष्ठान करते हैं उससे हमारी आत्मिक शुद्धि हो जाती है। यहाँ यह ध्यान रहे कि फलाहार यानि केवल (फल आहार), ज्यादा से ज्यादा दूध बस। यदि आप फलाहार के नाम पे साबूदाने की खिचड़ी, कुट्टू के आटे की पूड़ियां, आलू और शकरकन्द का हलवा और खोवे की मिठाईयां खायेंगे तो उल्टा नुकसान होगा। उससे तो अच्छा है कि कोई व्रत न करके शुद्ध सात्विक हल्का भोजन कर लिया जाये।

इसलिए नौ दिन सात्विक भोजन करें जिसमें प्याज लहसुन मांस अंडा आदि भी ना हो कम भोजन करें मन को शांत और ईश्वर की प्रार्थना करें की हमारे शरीर की रक्षा करे यह नवरात्र व्रत व्यवस्था आयुर्वेद के प्रथम सिद्धांत पर कार्य करता है जिसमें उचित मात्रा में स्वच्छ व ताजा आहार करने को बताया है। जिससे हमारी पाचक अग्नि नष्ट न हो और रोग प्रतिरोधक क्षमता बनी रहे। नौ दिन की इस तपस्या के बाद १०वाँ दिन आता है जिसको दशहरा बोलते हैं दसवीं इन्द्री यानि दसवाँ है मन जिसने नौ इंद्रियों को हरा दिया इसलिए इस पर्व को दशहरा नवरात्र का व्रत कहते हैं।

नवदुर्गा के अमूर्त रूप क्या है ?

नवरात्रि कोई नव दुर्गा की नौ शक्तियों का कोई रूप नहीं हैं। शरद ऋतु की हल्की दस्तक के कारण हमारे आयुर्वेद के ज्ञाता ऋषि मुनियों ने कुछ औषधियों को इस ऋतु में विशेष सेवन हेतु बताया था। जिससे प्रत्येक दिन हम सभी उसका सेवन कर शक्ति के रूप में शारीरिक व मानसिक क्षमता को बढ़ाकर हम शक्तिवान ऊर्जावान बलवान व विद्वान बन सकें।

लेकिन इसका वास्तविक रूप विकृत कर अर्थ का अनर्थ ही कर दिया। हर दिव्यौषधि को एक शक्तिस्वरूपा कल्पित स्त्री का रूप दे दिया कल्पना में ही नौ शक्तिवर्धक औषधियों को स्त्री नाम देकर उनका वीभत्स आकार गढ़कर उन्हें मूर्त रूप में पूजना शुरू कर दिया।

नवदुर्गा के अमूर्त रूप के रूपक औषधि जिनका हमें सेवन करना चाहिए।

१ हरड़ २ ब्राह्मी ३ चन्दसूर ४ कूष्मांडा ५ अलसी ६ मोईपा या माचिका ७ नागदान ८ तुलसी ९ शतावरी

प्रथमः- शैलपुत्री यानि हरड़ - कई प्रकार की समस्याओं में काम आने वाली औषधि हरड़, हिमावती है यह आयुर्वेद की प्रधान औषधि है, जो सात प्रकार की होती है।

द्वितीयः- ब्रह्मचारिणी यानि ब्राह्मी यह आयु और स्मरण शक्ति को बढ़ाने वाली रूधिर विकारों का नाश करने वाली और स्वर को मधुर करने वाली है। इसलिए ब्राह्मी को सरस्वती भी कहा जाता है। यह मन व मस्तिष्क में शक्ति प्रदान करती है और गैस व मूत्र संबंधी रोगों की प्रमुख दवा है। यह मूत्र द्वारा रक्त विकारों को बाहर निकालने में समर्थ औषधि है।

तृतीयः- चंद्रघंटा यानि चन्दुसूर - चंद्रघंटा इसे चन्दुसूर या चमसूर कहा गया है। यह एक ऐसा पौधा है जो धनिये के समान है। इस पौधे की पत्तियों की सब्जी बनाई जाती है जो लाभदायक होती है। यह औषधि मोटापा दूर करने में लाभप्रद है इसलिए इसे चर्महन्ती भी कहते हैं। शक्ति को बढ़ाने वाली हृदय रोग को ठीक करने वाली चंद्रिका औषधि है।

चतुर्थः - कुष्माण्डा यानि पेठा - इस औषधि से पेठा मिठाई बनती हैं। इसलिए इसको पेठा कहते हैं। इसे कुम्हड़ा भी कहते हैं जो पुष्टिकारक वीर्यवर्धक व रक्त के विकार को ठीक कर पेट को साफ करने में सहायक है। मानसिक रूप से कमजोर व्यक्ति के लिए यह अमृत समान है। यह शरीर के समस्त दोषों को दूर कर हृदयरोग को ठीक करता है। कुम्हड़ा रक्त पित्त एवं गैस को दूर करता है।

पंचमः- स्कंदमाता यानि अलसी यह औषधि के रूप में अलसी में विद्यमान हैं। यह वात, पित्त, कफ रोगों की नाशक औषधि है। अलसी, नीलपुष्पी, पावर्तती, स्यादुमा एवं क्षुमा। अलसी मधुरा तिक्ता स्त्रिग्धापाके कदुर्गरुः।। उष्णा दृष शुकवातन्धी कफ पित्त विनाशिनी है।

पष्ठमः- कात्यायनी यानि मोइया - इसे आयुर्वेद में कई नामों से जाना जाता है जैसे अम्बा, अम्बालिका, अम्बिका इसके अलावा इसे मोइया अर्थात माचिका भी कहते हैं। यह कफ, पित्त अधिक विकार व कंठ के रोग का नाश करती है।

सप्तमः- कालरात्रि यानि नागदौन - यह नागदौन औषधि के रूप में जानी जाती है। सभी प्रकार के रोगों की नाशक सर्वत्र विजय दिलाने वाली मन एवं मस्तिष्क के समस्त विकारों को दूर करने वाली औषधि है। इस पौधे को व्यक्ति

शेष पृष्ठ ७ पर.....

पृष्ठ.....६ का शेष

अपने घर में लगाने पर घर के सारे कष्ट दूर हो जाते हैं। यह सुख देने वाली और सभी विषों का नाश करने वाली औषधि है।

अष्टमः-तुलसी सात प्रकार की होती है- सफेद तुलसी काली तुलसी मरुता दवना कुढेरक अर्जक और षटपत्र। ये सभी प्रकार की तुलसी रक्त को साफ करती है व हृदय रोग का नाश करती है।

नवमः-शतावरी -जिसे नारायणी या शतावरी कहते हैं। शतावरी बुद्धि बल व वीर्य के लिए उत्तम औषधि है। यह रक्त विकार औरं वात, पित्त शोध नाशक और हृदय को बल देने वाली महाऔषधि है। सिद्धिदात्री का जो मनुष्य नियमपूर्वक सेवन करता है। उसके सभी कष्ट स्वयं ही दूर हो जाते हैं।

नौ तरह की वह दिव्यगुणयुक्त महा औषधियाँ निस्संदेह बहुत ही प्रभावशाली व रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने वाली जिससे हम ताउम्र हर मौसम की प्रतिकूल परिस्थितियों में भी स्वयं को ढालने में सक्षम हुआ करते थे और निरोगी बन दीर्घायु प्राप्त करते थे। इस आयुर्वेद की भाषा में नौ औषधि के रूप में मनुष्य की प्रत्येक बीमारी को ठीक कर रक्त का संचालन उचित व साफ कर मनुष्य को स्वस्थ करतीं है। अतः मनुष्य को इन औषधियों का प्रयोग करना चाहिये।

व्रत का सही अर्थ अर्थ क्या है?

व्रत का अर्थ भूखे रहना नहीं है। व्रत का एक अन्य अर्थ संकल्प ध्रतिज्ञा से भी है। व्रत का अर्थ यजुर्वेद में बहुत स्पष्ट रुप में बताया गया है। देखिए—

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।

इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि।। (यजु० १/५)

भावार्थ—हे ज्ञानस्वरुप प्रभो! आप व्रतों के पालक और रक्षक हैं। मैं भी व्रत का अनुष्ठान करुँगा। मुझे ऐसी शक्ति और सामर्थ्य प्रदान कीजिए कि मैं अपने व्रत का पालन कर सकूँ। मेरा व्रत यह है कि मैं असत्य-भाषण को छोड़कर सत्य को जीवन में धारण करूँगा।

इस मन्त्र के अनुसार व्रत का अर्थ हुआ किसी एक दुर्गुण, बुराई को छोड़कर किसी उत्तम गुण को जीवन में धारण करना।

सत्यनारायणव्रत का अर्थ है कि मनुष्य अपने ह्रदय में विद्यमान सत्यस्वरुप परमात्मा के गुणों को अपने जीवन में धारण करे। जीवन में सत्यवादी बने। मन, वचन और कर्म से सत्य का पालन करे।

उपवास का अर्थ है—

उप समीपे यो वासो
जीवात्मपरमात्मयोः।
उपवासः स विज्ञेयो न तु कायस्य
शोषणम्।।
(वराहोपनिषद् २/३६)

भावार्थ—जीवात्मा का परमात्मा के समीप होना, परमात्मा की उपासना करना, परमात्मा के गुणों को जीवन में धारण करना, इसी का नाम उपवास है। शरीर को सुखाने का नाम उपवास नहीं है।

प्राचीन साहित्य में विद्वानों, सन्तों और ऋषि-महर्षियों ने भूखे-मरनेरुपी व्रत का खण्डन किया है। प्राचीन ग्रन्थों में न तो 'सन्तोषी' के व्रत का वर्णन है और न एकादशी आदि व्रतों का विधान है।

महर्षि मनु ने लिखा है—

पत्यौ जीवति या तु स्त्री
उपवासव्रतं चरेत्।
आयुष्यं हरते भर्तुर्नरकं चैव गच्छति।।

भावार्थ—जो स्त्री पति के जीवित रहते हुए भूखे-मरनारुप व्रत या उपवास करती है, वह पति की आयु को कम करती है और मरने पर स्वयं नरक को जाती है।

इस प्रकार भूखा-मरने वाले व्रत का भी सन्तों, ऋषि-मुनियों ने खण्डन किया है, आयुर्वेद की दृष्टि से भी आज जिस रुप में इन व्रतों को किया जाता है, उस रुप में ये व्रत शरीर को हानि पहुँचाते हैं। क्योंकि आजकल के व्रत ऐसे हैं कि दिन भर अन्न को छोड़कर कुछ न कुछ खाते रहो। इस प्रकार आयुर्वेद की दृष्टि से जो उपवास का लाभ पूरे दिन निराहार रहकर या अल्पाहार करके मिलना चाहिये था, वह नहीं मिल पाता (साप्ताहिक या पाक्षिक उपवास) व्रत के बहाने हर समय मुँह में कुछ-न-कुछ ठूँसते जाने का नाम व्रत नहीं है।

पाँच ज्ञानेन्द्रिय और पाँच कर्मेन्द्रिय तथा एक मन—ये ग्यारह हैं। इन सबको अपने वश में रखना, आँखों से शुभ देखना, कानों से शुभ सुनना, नासिका से "ओ३म" का जप करना, वाणी से मधुर बोलना, जिह्वा से शरीर को बल और शक्ति देने वाले पदार्थों का ही सेवन करना, हाथों से उत्तम कर्म करना, पाँवों से उत्तम सत्सङ्ग में जाना, जीवन में ब्रह्मचर्य का पालन करना—यह है सच्चा एकादशी-व्रत। इस व्रत के करने से आपके जीवन का कल्याण हो जाएगा। शरीर को गलाने और सुखाने से तो यह लोक भी बर्बाद हो जाएगा, मुक्ति मिलना तो दूर की बात है।

दैव-यज्ञ द्वारा नवरात्रि की उपासनाः

वैदिक मंत्रों द्वारा अनुष्ठान करके यज्ञ में जो आहुति दी जाती है वे द्यूलोक को प्राप्त हो जाती है ! इस प्रकार नवरात्रि की उपासना की जाती है। प्रतिपदा से लेकर अष्टमी तक प्रकृति की गति चैत्र के महीने में शांत रहती है। इसलिए इसको गति देने के लिए तथा वायुमंडल को शोधन करने के लिए प्रत्येक मानव को यज्ञमयी ज्योति जागरूक करना चाहिए। इसका अनुष्ठान व्रती रहकर संकल्प के द्वारा जब यज्ञ करनेवाला यज्ञ करता है तो उस समय यह प्रकृति - माँ वसुंधरा बनकर अपने प्यारे पुत्रों को इच्छानुसार फल दिया करती है। ऊँचे कार्य का ऊँचा परिणाम या फल होता है।

दैव-यज्ञ करने से वायुमंडल जितना शोधित होता है , उतनी ही कृषक की भूमि पवित्र होती है और उतनी ही पृथ्वी के गर्भ में नाना प्रकार कि औषधियाँ शोधित हो जाती है और पवित्र बन जाती है। इसीलिए यह अनुष्ठान किया जाता है ।

पर्व विधि संक्षेप में:

१. इन दिनों अल्प भोजन करें और संभव हो तो एक समय उपवास जरूर करें। शाम को भोजन जल्दी सूर्यास्त से पहले कर लें।

२. इन दिनों प्रत्येक दिन के हिसाब से इन ओषधियों का सेवन करें

१ हरड़ २ ब्राह्मी ३ चन्दसूर ४ कूष्मांडा ५ अलसी ६ मोईपा या माचिका ७ नागदान ८ तुलसी ९ शतावरी।

३ दैनिक यज्ञ करें और मौसम के अनुसार सामग्री तैयार करें।

४. इन्द्रियों को संयम में रखे, कोई तामसिक भोजन न करें, तथा काम, क्रोध आदि दोषों से बिल्कुल दूर रहें, सूक्ष्म व्यायाम करें।

५. रात्रि में भजन, धार्मिक चर्चा करें और इस प्रकार की चर्चा में भाग लें।

आर्यों के विमर्श के लिए...

स्मृति और संस्कार में अन्तर

-स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

योगदर्शन के अनुसार ...चित्त की पाँच वृत्तियाँ हैं - प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा और स्मृति। निद्रा का अर्थ है स्वप्न, स्वप्न में भी उलटी-सीधी उलझी सी स्मृतियाँ जागरित अवस्था की रहती हैं - जागरित अवस्था में स्मृतियाँ सुलझी सी हमारे समक्ष आती हैं। स्मृति स्वयं में एक बड़ा विषय है - हर एक की स्मृति कुछ न कुछ विशेषता रखती है। मैंने बहुत अच्छी स्मृति वाले विचित्र व्यक्ति भी देखे हैं, जो क्षणों में लम्बे-लम्बे गणित के प्रश्न हल करते हैं। ऐसे हैं, जिन्हें एक-दो बार पढ़ने पर ही गद्य-पद्य के उद्धरण सहज रूप में याद होते हैं। बहुतों को सब कुछ याद रहते हैं, पर प्रतिदिन के परिचितों के नाम ही भूल जाते हैं।

स्मृति चित्त की वृत्ति है। जब नया जन्म मिलता है, तो नया चित्त मिलता है। एक जन्म की स्मृति दूसरे जन्म में नहीं जाती। स्मृति के लिए एक स्मृति पटल चाहिए, जिनमें विचित्र कोशायें (memory cells) होती हैं - एक सघन द्रव (Viscous fluid) होता है, जिस पर टेप-रिकार्ड के समान घटनायें अंकित होती हैं, और मिटती हैं। मस्तिष्क का यह स्मृति-पटल मरने से पूर्व ही नष्ट-भ्रष्ट होने लगता है। बिना इस टेप के मरने के बाद कोई भी जीवात्मा पिछले जीवन की घटनाओं को समझ नहीं सकता।

अतः जो लोग यह मानते हैं, कि किसी-किसी बच्चे को पिछले जन्म की घटनायें याद रहती हैं - यह कोरी गप्प है।

जो प्रतिभा एक जीवन से दूसरे जीवन को जाती है, वह चित्त की वृत्ति नहीं है - उस प्रतिभा को संस्कार कहते हैं। संस्कार चित्त की वृत्ति नहीं है। ये संस्कार जीवात्मा के आनन्दमय और विज्ञानमय कोष पर अंकित होते हैं। इन्हीं संस्कारों के कारण संस्कृत भाषा का कवि अगले जीवन में बचपन से ही फारसी, अरबी या जर्मन भाषा का सहज-कवि बन जाता है। इन्हीं संस्कारों के कारण भारतीय संगीत में प्रवीण व्यक्ति अगले जीवन में यूरोपीय संगीत का चटपट विशारद बन जाता है। अपने देश का प्रसिद्ध गणितज्ञ रामानुजन् तरुण अवस्था में ही प्रसिद्ध गणितज्ञ बन गया।

अतः याद रखना चाहिए कि स्मृति और संस्कार दोनों में महान अंतर है। स्मृति अगले जीवन में साथ नहीं जाएगी, क्योंकि यह चित्त की वृत्ति है - यह प्रकृति से उत्पन्न होती है - प्रकृतेर्महान् (सांख्य १.६१) महादाख्यमाद्यं कार्यं तम्मनः। (सांख्य १.७१) अर्थात मूल प्रकृति से जो पहली विकृति होती है, उसे ही महत् कहते हैं, और उसी का नाम मन है।

स्रोत : योग, प्राणायाम और चेतनाएं

पृष्ठ.....२ का शेष

उत्तर सिद्ध होता है। यद्यपि ऐसी अन्यथा बातों पर लिखना व्यर्थ है क्योंकि जो किसी से हो ही नहीं सकता। देखो जो मकान के द्वार और छिद्र बिल्कुल बन्द किये जायें तो अग्नि कभी न जलेगी और एक ओर से ओट किया जाये तो दूसरी ओर से जहाँ मार्ग पाता है वहाँ से अतिवेग से चलकर वही वायु के जीवों से उसका सम्बन्ध होता है और कपड़े की ओट से भी वह कभी ठंडा नहीं हो सकता किन्तु वह एक प्रोर से रुक कर दूसरी ओर से गर्म हो जाता है ज्वाला की जितनी गर्मी है। जबतक बाहर की वायु से सम्बन्ध और संघात छूट एक-एक परमाणु पृथक्-पृथक् होकर न मिल जायें तबतक अग्नि ठंडा कैसे हो सकता है। और सर्वत्र वायु में विद्युतरूप अग्नि भी (कि जहाँ वायु के शरीर वाले जीव हैं) व्याप्त हो रहा है फिर वायुस्थ जीव क्यों नहीं मर जाते ? जब एक और कपड़े आदि से आड़ा किया जाये तो दूसरी और गर्म वायु अधिक इकट्ठा फैलने और टपकने से शीघ्र ठंडा नहीं होता किन्तु जो चारों ओर से खुला रहे तो शीघ्र ठंडा हो जाता है जैसे कि मैदान की अग्नि । जब अग्नि की घोर आड़ा हाथ दिया जाये तो हाथ की आड़ से दूसरी ओर गर्मी फैलेगी। आड़े हाथ करने से गर्मी कुछ भी कम नहीं हो सकती इससे यह अविद्वानों की बात है। देखो जो सूर्य की ओर हाथ करे तो क्या सूर्य्य की गर्मी घट जाती है और क्या जिस बर्तन में जल गर्म किया जाता है उसका मुख खुला रखने से अधिक गर्मी और आधा वा तीन भाग बन्द करने से अर्थात आधे वा चौथे भाग से भाप अधिक और जोर से निकल कर बाहर की वायु में नहीं फैलती। और जो उसका मुख सर्वथा बन्द किया जाये तो क्या वर्तन टूट फूट और उड़ न जायेगा ? क्या जिसने अग्नि की ज्वाला के सामने आड़ की तो उसकी ओर गर्मी कम होने से दूसरी ओर अधिक गर्मी नहीं होती। क्या हाथ के आड़ किये हाथ से अग्नि के दूसरी ओर जिस किसी के हाथ और कोई वस्तु हो तो वह अधिक तप्त नहीं होती और जब चारों ओर से आड़ कर अग्नि को रोका जावे तो गोलाकार होकर ऊपर को क्यों न चढ़ेगा और भाप के दूसरी ओर हाथ जैसा कि इधर का जलता है वैसा उधर का न जलेगा और हाथ की आड़ के हाथ में गर्मी इस लिये अधिक नहीं लगती कि वह अगल बगल होकर ऊपर उठ जाती है। देखो तुम्हारी यहाँ अत्यन्त भूल है क्योंकि जो वायु के शरीर वाले जीव गर्म वायु से मर जाते तो वैशाख और ज्येष्ठ मास में जबकि वायु अत्यन्त तप्त हो लू चलता है तब क्या सब जीव मर जाते हैं और गर्म वायु के जीव जबकि पौष मास में अतिशीत पड़ता है तब क्या मर जाते हैं ? इससे यह बात सृष्टिक्रम से विरुद्ध होने से मिथ्या ही है क्योंकि जो ऐसा होता तो परमेश्वर इस सृष्टि में अग्नि और सूर्य्यादि को क्यों रचता इससे जो तुम सत्यासत्य बातों का निश्चय करना चाहो तो वेदादि सत्यशास्त्र पढ़ो और सुनो जिससे यथार्थ ज्ञान पाके धर्म, अर्थ, काम, मोक्षरूपी फल को प्राप्त हो सको। जो ऐसा न करके अपने मत के ग्रन्थों के विश्वास में रहोगे तो यह उत्तम मनुष्य जन्म व्यर्थ ही नष्ट करोगे।

(देश हितैषी पृष्ठ ८ से १०, खंड १ संख्या ५ भादों संवत् १९३९)

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०९४१२६७८५७१, मंत्री-०९४१५३६५५७६, सम्पादक-९४५१८९१९७७
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
....
....
....

आर्य समाज आर्ष गुरूकुल नोएडा का वार्षिकोत्सव

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की २००वीं जयन्ती के अवसर पर आर्य समाज नोएडा एवं आर्ष गुरूकुल में भव्य आर्य महासम्मेलन एवं वार्षिकोत्सव का आयोजन दिनांक १५, १६, १७ दिसम्बर, २०२३ को आयोजित किया जा रहा है। जिसमें आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान पधार रहे हैं।

सभी आर्य जनों से निवेदन है कि उक्त समारोह में अपनी गरिममायी उपस्थिति से कार्यक्रम को सफल बनावें।

–आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार
चलभाष- ९८६६३४६३०४

।। ओ३म् ।।
अभि प्र नोनुमो वृषन्।
हे सुखवर्षक प्रभो! आपको हमारा वन्दन है।

रजतजयन्तीसमारोहः
निमन्त्रणपत्रम्

आर्यकन्यागुरुकुलशिवगञ्जस्य
पञ्चविंशतितमः भव्यवार्षिकोत्सवः
रजतजयन्तीवर्षे
सप्तमः समावर्तनसंस्कारः दीक्षान्तसमारोहश्च

आश्विन शुक्ल चतुर्दशी, पूर्णिमा, कार्तिक कृष्ण प्रथमा, वि.सं. २०८०
शुक्र, शनि, रवि, २७, २८, २९ अक्टू. २०२३ तमे सम्पत्स्यते।

कार्यक्रमस्थलम्
आर्यकन्यागुरुकुलम्
शिवगञ्जः, जि. सिरोही ३०७०२७ राजस्थानम्
सम्पर्कसूत्रम्- ९४६१२१६४९५, ९६८०६७४७८९, ७००७७४८६१६
ई-मेल : gurukulsheoganj@gmail.com

कार्यक्रम विस्तृति

प्रथम दिवस शुक्रवार, २७ अक्टू. २०२३

५:०० से ६:०० - अध्यात्म शिविर
७:०० से ९:०० - ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ
९:०० से ९:३० - ध्वजोत्तोलन
९:३० से १०:०० - अल्पाहार

रजत जयन्ती समारोह उद्घाटन सत्र

१०:०० से १०:१५ - मुख्य अतिथि स्वागत
१०:१५ से १०:३० - उद्घाटन, मन्त्रगायन
१०:३० से ११:०० - स्वागत भाषण, आशीर्वचन
११:०० से १२:३० - ब्रह्मचारिणियों के उद्‌बोधन, गीत, सम्मान, स्मारिका विमोचन आदि।
२:३० से ४:३० - वेद सम्मेलन

विषय : वेदों में विज्ञान व व्यवहार सूत्र, पृथ्वी का आधार-परिचर्चा

५:०० से ६:०० - ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ
७:०० से ११:३० - प्रभुभक्ति गीत, भजन, आगत विद्वानों के प्रवचन, गुरुकुलीय ब्रह्मचारिणियों के विशिष्ट कार्यक्रम, प्रभुभक्ति गीत, वेदपाठ, संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी भाषण, अष्टाध्यायी, निघण्टु अन्त्याक्षरी, २५ पञ्चविंशति तत्त्व प्रस्तुति प्रतियोगिता, गीत आदि।

द्वितीय दिवस शनिवार, २८ अक्टू. २०२३

५:०० से ६:०० - अध्यात्म शिविर
७:०० से ९:०० - ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ
९:०० से ९:३० - अल्पाहार

धर्म सम्मेलन

विषय : देश की उथल पुथल का कारण क्या धर्म\

९:३० से १२:०० - मन्त्रगायन, भजन, विद्वानों के प्रवचन, पुस्तक विमोचन, उद्‌बोधन, ब्रह्मचारिणियों के भाषण, पञ्चोपदेश श्रावण, संस्कृत वार्ता -पितामहस्य पुत्रपुत्र्यः, सम्मान आदि कार्यक्रम होंगे।

शिक्षा सम्मेलन

विषय: शिक्षा में गुरुकुलों की भूमिका

२:०० से ५:०० - आगत विद्वज्जनों के भजन, प्रवचन, ब्रह्मचारिणियों के विशिष्ट कार्यक्रम, शास्त्रार्थ-वेदों में इतिहास है या नहीं।
५:३० से ६:३० - ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ
७:३० से १०:३० - गीत, भाषण, ब्रह्मचारिणियों के शौर्यपूर्ण शस्त्र संचालन, लाठी, भाला, तलवार, स्तूप, मार्शल आर्ट, परेड, निशानेबाजी आदि प्रदर्शन प्रस्तुत किये जायेंगे।

तृतीय दिवस २९ अक्टू. २०२३

५:०० से ६:०० - अध्यात्म शिविर
७:०० से ९:३० - ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ पूर्णाहुति, समावर्तन संस्कार
९:३० से १०:०० - अल्पाहार
१०:०० से ११:०० - विद्वानों के भजन, प्रवचन
११:०० से १:०० - दीक्षा समारोह- नव २५ स्नातिकाओं को उपाधि वितरण, आत्मनिवेदन आदि विशेष कार्यक्रम। पुरस्कार वितरण, स्वागत, सम्मान, धन्यवाद एवं शान्तिपाठ के साथ समारोह समापन होगा।
मध्याह्न ३:०० से ६:०० - शोभा यात्रा।

वेदोज्ज्वला

(दुर्गा पूजा पर विशेष) -आचार्य राहुल देव

विषय - राजा युद्ध की रणनीति कैसे बनाये।
ऋषिः - कण्वो घौरः देवता - वरुणमित्रार्यमणः
छन्दः - निचृद्गायत्री स्वरः - षड्जः

वि दुर्गा वि द्विषः पुरो घ्नन्ति राजान एषाम्।
नयन्ति दुरिता तिरः ।। - ऋग्वेद १/४१/३

पद पाठः –वि। दुःगा। वि। द्विषः। पुरः। घ्नन्ति। राजानः। एषाम्। नयन्ति। दुःइता। तिरः।।

पदार्थः - राजानः - उत्तम कर्म वा गुणों से प्रकाशमान राजा लोग
एषाम् - इन शत्रुओं के वि - विशेष प्रकार से बने
दुर्गा - दुःख से जाने योग्य किल्लों, प्रकोटों और प्राचीरों तथा सेना को
पुरः - नगरों को घ्नन्ति - छिन्न-भिन्न करते और
वि - विशेष प्रकार से तैयार किये गये द्विषः - शत्रुओं को
दुरिता - दूर करते हैं और
तिरोनयन्ति - नष्ट कर देते हैं, वे चक्रवर्ती राज्य को प्राप्त होने को समर्थ होते हैं।

भावार्थः - जो अन्याय करनेवाले मनुष्य धार्मिक मनुष्यों को पीड़ा देकर दुर्ग में रहते और फिर आकर दुःखी करते हों उनको नष्ट और श्रेष्ठों के पालन करने के लिये विद्वान् धार्मिक राजा लोगों को चाहिये कि उनके प्रकोट और नगरों का विनाश और शत्रुओं को छिन्न-भिन्न मार और वशीभूत करके धर्म से राज्य का पालन करें।।

मन्त्र की मुख्य बातें -
१) राजा उत्तम गुणों वाला होना चाहिए। २) अपने शत्रुओं को तीन मोर्चे पर परास्त करता है।
३) पहला इनके विशेष दुर्गो पर चढाई करना ४) दूसरा नगरों को चारों ओर से घेरना।
५) तीसरा विशेष प्रशिक्षित शत्रुसेना को भी दूर भगाना।
६) तीन मोर्चे पर विजय प्राप्त कैसे करना।

व्याख्या – इस मन्त्र में दुर्गा शब्द दिखाई पडता है। दुर्गा शब्द किला, परकोटों, प्राचीर और सेना के लिये उपयुक्त होता है। दुर्गा भारत में शक्ति की उपासना का पर्याय बन गया है। बल की उपासना मनुष्य को बलवान बनाती है। किन्तु शारीरिक बल के साथ आत्मिक बल की वृद्धि बहुत आवश्यक है। इन दोनों बलों से मनुष्य न केवल शारीरिक उन्नति करता है अपितु समाजिक उन्नति भी करता है। प्रत्येक व्यक्ति शारीरिक बल, स्वाथ्य सम्पदा और ऐश्वर्य से परिपूर्ण होना चाहता है प्रत्येक मनुष्य की व्यक्तिगत और पारिवारिक आवश्यकताएँ भिन्नभिन्न होती है। वह शारीरिक तौर पर स्वस्थ और मजबूत होना चाहता है। परन्तु शक्ति उपासना, राष्ट्र का भी बहुत आवश्यक अंग है, आप विचार कीजिए। शारीरिक बल और शारीरिक ऊर्जा, पराक्रम आदि तो पुरुषों के विषय माने जाते है। इसमें पुरुषों की भागीदारी अधिक होती है, अर्थात् यह पुरुष का कार्य माना जाता है। किन्तु यह विशुद्ध रुप से पुरुषों का कार्य होते हुये भी इसमें स्त्री को सम्मिलित क्यों किया गया है? दुर्गा शक्ति कहकर स्त्रियों को क्यों जोड़ा गया या रखा गया है? क्या आपने कभी विचार किया?

वस्तुतः किसी वर्ग को संघर्षशील बनाने के लिये कुछ कार्यक्रम शुरु किये जाते है उसके साथ अनेक प्रयोग किये जाते है। और मध्य काल में भारत में महिलाओं की स्थिति बिल्कुल भी ठीक नहीं थी। मध्यकाल में दुर्गा शब्द महिलाशक्ति और शक्ति की उपासना के लिये रुढ हो गया। दुर्गा अर्थात् स्त्री को शारीरिक शक्ति के साथ, अन्याय और राक्षस प्रवृत्ति के विरुद्ध लडने और संघर्ष करके, उन्हे विजय प्राप्त करने की कहानी है 'दुर्गा पूजा'। नारी जब-जब कुचली गई, उसको रौंदा गया, उसकी अस्मिता लूटी गई, उस पर ज्यादती हुई, उस पर अन्याय, आत्याचार हुआ है, वह दुर्गा बनी है, वह किले के समान अड़ करके खड़ी हुई है। उसने संघर्षो और बलिदानों की बहुत सी गाथाएँ लिखी है। किन्तु कालांतर में वही चीजें सभ्यता और परम्परा का रुप बन जाती है फिर लोग धीरे-धीरे उसके प्रारम्भ किये हुये उद्देश्य को भूल जाते है फिर नई-नई कहानियाँ जुड जाती हैं।

अब आइये मन्त्र पर विचार करते हैं -

मन्त्र में राजा के लिये तीन स्तर पर सुदृढ़ होकर युद्ध की रणनीति बनाने का विचार प्रकट किया गया है।

पहली रणनीति है -
१) राजानः एषाम् वि दुर्गा घ्नन्ति - हे राजा तुम अपने शत्रुओं को विशेष प्रकार से बने दुर्गों को समझो। उनके द्वारा बनाये गये परकोटो और प्राचीर को समझो। क्योंकि इसके बिना तुम शत्रुओं पर विजय प्राप्त नहीं कर सकते।

दूसरी रणनीति है -
२) राजानः एषाम् पुरः घ्नन्ति - राजा लोग अपने शत्रुओं के नगरों को नष्ट करते है। राजाओं को रणनीति के तहत शत्रु राष्ट्रों के नगरों को घेरना पडता है अथवा उन पर अधिकार करना पडता है।

तीसरी रणनीति है -
३) राजानः एषाम् वि द्विषः दूरिता तिरोनयन्ति - राजा लोग अपने शत्रुओं के अ प्रशिक्षित सेना को पहले दूर भगाती है या खदेड़ती है आथवा उनका नाश करती है। विशेष सैनिकों को परास्त किये बिना विजय नहीं मिलती है।

यह रणनीति ठीक विपरीत भी कार्य करती है एक राजा को अपने शत्रुओं से सुरक्षा के लिये अच्छे दुर्गो परकोटो और प्राचीर का निर्माण करना चाहिए। दूसरा अपने नगरों को सुरक्षित रखना चाहिए। और तीसरा अपनी सेना में विशेष प्रशिक्षित योद्धा भी होना चाहिए। आजकल तो महिलाएं भी डिफेंस में आ रही है। बडे बडे फाइटर प्लेन उडा रही है। सेना में भर्ती हो रही है। सुरक्षा क्षेत्र में अभुत पूर्व कार्य कर रही हैं। दुर्गा का अर्थ सेना होता होता है सेना वही शक्तिशाली होगी जिसमें हमारी दुर्गाएँ होगी। आईये हम रक्षा बल युद्ध क्षेत्र में दुर्गाओं और प्रतिनिधित्व बढायें और उन्हें वीराङ्गना बनायें।

चलभाष- ९६९१९४६४१६

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–पंकज जायसवाल भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।